ओ३म्

इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार,10 मार्च 2013

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार 10 मार्च, 2013 से 16 मार्च, 2013

फा.कृ.14 ● वि० सं०–2069 ● वर्ष 77, अंक 48, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 190 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,113 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी.भिखीविंड (अमृतसर) में हुआ वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

गुरु नानक देव डी.ए.वी पब्लिक स्कूल भिखीविंड में वार्षिक पुरस्कार समारोह मनाया गया जिसके मुख्य अतिथि के रूप में श्री पूनम सूरी जी, प्रधान डी. ए.वी. प्रबन्धक कमेटी, नई दिल्ली, एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमति मणि सूरी जी पधारे। इस सुअवसर पर निर्देशक श्री जे. पी शूर, चेयरमैन श्री इकबाल सिंह बेदी, उप–प्रधान जे के लूथरा, मैनेजर डा. के एन कौल, क्षेत्रीय निदेशिका डॉ. नीलम कामरा तथा बाबा वसन सिंह जी खास उपस्थित रहे। आए हुए गणमान्य व्यक्तियों का प्रि. संजीव कोचर ने हार्दिक स्वागत किया। सर्वप्रथम जपुजी साहिब और वैदिक मन्त्रोच्चारण हुआ। विद्यार्थियों द्वारा लगाई गई विज्ञान प्रदर्शनी में प्रधान जी ने विद्यार्थियों से प्रश्न पूछकर उन्हें उत्साहित किया। इसके पश्चात् प्रधान जी ने नवनिर्मित 'सेमीनार हाल' और 'यज्ञशाला' का उद्घाटन किया। तीन राज्यों गुजरात, राजस्थान और पंजाब की संस्कृति

प्रदर्शनी को देखकर प्रधान जी ने इसकी प्रशंसा की। प्रज्ञादीपज्योति प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का आरम्भ हुआ। कार्यक्रम में विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा विभिन्न प्रकार के रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम को देखकर प्रधान जी इतने प्रभावित हुए निरन्तर पाँच घंटे विद्यालय में रहे और एक–एक गतिविधि को बारीकी से देखा। विद्यालय के होनहार विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों में अब्बल आने पर प्रधान जी द्वारा पुरस्कृत किया गया। अपने आशीर्वचनों से निरन्तर आगे बढ़ते रहने के साथ साथ विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण पर जोर देकर सदा खुश रहने के लिए आर्शीवाद दिया। मुख्य अतिथि ने अध्यापकों विद्यार्थियों और उनके माता–पिता का आभार व्यक्त करते हुए समारोह की व्यवस्था की प्रशंसा की। विद्यालय के मैनेजर डा. के एन. काल ने अतिथिगणों और अभिभावकों का धन्यवाद किया।

डी.ए.वी.चंद्रनगर, गाजियाबाद में लगा चरित्र निर्माण शिविर

डी.ए.वी सैन्टेनरी पब्लिक स्कूल, चन्द्रनगर में एक चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। इसमें कक्षा पाँचवीं, छठी एवं सातवीं के छात्रों ने भाग लिया।

यज्ञ से शिविर का शुभारंभ किया गया। छात्रों ने पूरी श्रद्धा एवं भक्तिभाव से मंत्रोच्चारण करते हुए यज्ञ किया। तत्पश्चात् बौद्धिकी की कक्षा में नैतिकता एवं जीवन मूल्यों की शिक्षा दी गई। आर्य समाज के नियमों को दृढ़ता पूर्वक अपने जीवन में अपनाने एवं सुसंस्कृत नागरिक बनने की प्रेरणा दी गई। छात्रों को अनेक योगासन करवाए गए और आत्मरक्षा के तरीके भी बताए गए। भोजन के पश्चात् छात्रों को चार समूहों में बाँटा गया और अध्यापिकाओं के साथ उन्होंने अनेक प्रकार के खेल खेले। छात्रों के सामान्य ज्ञान की परीक्षा ली गई। प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कृत भी किया गया। कुछ छात्रों ने महापुरुषों के जीवन के प्रेरक प्रसंग सुनाए और अंत में सभी छात्रों ने शांति पाठ का उच्चारण किया। शिविर के कार्यक्रमों का संयोजन सुन्दर था। प्रत्येक छात्र को अच्छे व्यवहार, परिश्रमशीलता, कर्त्तव्यनिष्ठा और पारस्परिक सहयोग की शिक्षा दी गई।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 10 मार्च, 2013 से 16 मार्च 2013

तैंतीस वीर्य

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

इदं वर्चो अग्निना दत्तमागन्, भर्गो यशः ओजो वयो बलम्।
त्रयस्त्रिंशद् यानि च वीर्याणि, तान्यग्निः प्रददातु मे।।

अथर्व 19.37.1

ऋषिः **अथर्वा**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

●**(अग्निना)** अग्नि–स्वरूप परमेश्वर से **(दत्तं)** दिया हुआ **(इदं)** यह **(वर्चः)** ब्रह्मवर्चस, **(भर्गः)** तप **(यशः)** यश, **(सहः)** साहस, **(ओजः)** ओज, **(वयः)** आयुष्य [और] **(बलं)** बल **(आगन्)** [मुझे] प्राप्त हो। **(यानि च)** और जो **(त्रयस्त्रिंशत्)** तैंतीस **(वीर्याणि)** वीर्य [हैं], **(तानि)** उन्हें **(अग्निः)** परमेश्वर **(मे)** मुझे **(प्रददातु)** प्रदान करे।

● परमेश्वर सर्वशक्तिमान् हैं, सब गुणों के आगार हैं। इधर मैं अत्यन्त अल्पशक्ति हूँ और अनेक न्यूनताएँ एवं अभाव मेरे अन्दर विद्यमान हैं। पर मैं इनसे निराश नहीं हूँ। परमेश्वर से सम्बन्ध जोड़कर मैं भी शक्तियों और गुणों का पुंज बन सकता है। मेरी कामना है कि मैं वर्चस्वी प्रभु से ब्रह्मवर्चस प्राप्त करूँ, ब्रह्मतेज से देदीप्यमान बन जाऊँ, जिससे कोई भी ब्रह्म–विरोधी भावनाएँ मुझे पराजित न कर सकें। मैं तपस्वी प्रभु से तपस्या की शिक्षा लूँ, इतना तप करूँ कि मेरे तप से समस्त पाप–वासनाएँ भस्म हो जाएँ। मैं यशस्वी प्रभु को यशः प्राप्ति के लिए अपना आदर्श बनाऊँ। उसके समान मैं भी अनुपम कीर्ति से जगमगाऊँ। मैं साहसी प्रभु से साहस प्राप्त करूँ। साहस ही मनुष्य को जटिल से जटिल कठिनाइयों से पार लगाता है। मैं ओजस्वी प्रभु से ओज ग्रहण करूँ, क्योंकि ओज ही शरीर एवं आत्मा का धन है। मैं आयुष्मान् प्रभु से दीर्घ आयुष्य प्राप्त करूँ, जिससे चिरकाल तक समाज की सेवा कर सकूँ। मैं बलवान प्रभु से शिक्षा लेकर अपने अन्दर मनोबल और दैहिक बल का संचय करूँ, जिससे मानसिक एवं बाह्य शत्रुओं से लोहा ले सकूँ।

ज्योतिर्मय परमात्मा मुझे वे तेंतीस वीर्य प्रदान करें जो मानव की पूर्णता के लिए आवश्यक हैं। ये तेंतीस वीर्य हैं दस इन्द्रिय–बल, चार अहंकार–चतुष्टय के बल, एक आत्मा का बल, पांच प्राणबल, पांच अन्नमयादि कोषों के बल, आठ अणिमादि योगसिद्धियों के बल। मानव–शरीर के अन्दर स्थित ये इन्द्रियादि यदि बलवान् नहीं होते, तो ये मनुष्य को पथभ्रष्ट करने में कारण बनते हैं। निर्बल इन्द्रियाँ अन्तर्मुखता को छोड़कर भोग–विषयों की ओर आकृष्ट होने लगती है। निर्बल आत्मा कामादि रिपुओं के वशीभूत हो जाना है। निर्बल प्राणपान आदि अपनी प्राण आदि क्रियाओं को साधु प्रकार से न कर सकने के कारण शरीर को रूग्ण एवं क्षीण कर देते हैं। निर्बल अन्नमयादि कोष आत्मोन्नति के सोपान न बनकर आत्मा को गिरानेवाले बन जाते हैं। निर्बल अणिमालघिमा आदि योगसिद्धियाँ परमात्म–साक्षात्कार में सहायक न होकर मनुष्य को सांसारिकता में ही फँसाये रखती हैं। अतः तेज और बल के परम स्रोत अग्नि प्रभु से मैं अपनी सम्पूर्ण विनम्रता के साथ याचना करता हूं कि वे मुझे उक्त तेंतीस प्रकार के बलों से बनाकर पूर्णता प्रदान करें।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

घोर घने जंगल में

● महात्मा आनन्द स्वामी

यज्ञ में डाले जाने वाले पदार्थों की शक्ति के सहस्रों–लाखों गुणा हो जाने की बात करते हुए स्वामी जी ने मिर्च के जलने और माइक्रोफोन पर अग्नि (बिजली) से संपर्क में आकर आवाज के विस्तृत हो जाने के उदाहरण दिये और कहा कि इस आत्मा की शक्ति भी अग्निमय परमात्मा से मिल करोड़ों गुणा बढ़ सकती है।

जड़देवों की पूजा की बात कर चेतन देवों–माता–पिता आचार्य–अतिथि की सेवा की बात की और कहा ऐसे लोगों की सेवा करना भी शारीरिक तप है जो परमात्मा को प्राप्त करने का सीधा मार्ग बताये कल्याण का मार्ग बनाये, धर्म पर चलने की प्रेरणा दे ऐसे गुरु को ढूंढने और उसके पास जाने की आज्ञा उपनिषदों ने दी है। गुरु में तीन गुण आवश्यक हैं उसके पास बैठने को जी चाहे, उसने अपनी जिह्वा को वश में कर लिया हो, और उसने क्रोध पर विजय पा ली हो। इस सन्दर्भ में सन्त दादू की कथा भी सुनाई।

स्वामी जी ने कहा गुरु आवश्य बनाओ परन्तु होश में बनाओ– उपनिषद ने कहा

उतिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत।

शारीरिक तप की बात करते हुए स्वामी जी ने – शौचम्– अन्दर और बाहर की पवित्रता की बात आरम्भ कि और कहा केवल नित्य स्नान करना ही पर्याप्त नहीं।

अब आगे.......

'पंचस्नानी बड़ा ज्ञानी, नित्य नहावे दरिद्री।'

अब बताओ, नित्य नहाना ही गन्दगी बन गया!

एक भारतीय सज्जन लंदन चले गये। प्रतिदिन नहाते थे। जिसके घर में ठहरे हुए थे उसने कहा, "तुम तो बहुत गन्दे हो"। भारतीय सज्जन ने पूछा, "क्यो?"

लंदनवाले ने कहा, "प्रतिदिन नहाते जो हो! गन्दे हो जाते हो तभी नहाते हो।"

"हत्तेरे की! प्रतिदिन नहाना भी गन्दगी का चिह्न बन गया! परन्तु यह दृष्टिकोण ठीक नहीं। प्रतिदिन नहाना चाहिए। शरीर को शुद्ध करना चाहिए। अन्दर और बाहर से शुद्ध करना चाहिए। आजकल बाहर की स्वच्छता पर बहुत ज़ोर है। बाहर से खूब सजे–सजाए रहते हैं लोग। कई नौजवान तो जेब के अन्दर ही हर समय सफ़ाई का सामान रखते हैं, शीशा भी, कंघी भी, कहीं कोई बाल टेढ़ा हुआ नहीं कि निकाला शीशा और–

(और स्वामीजी एक ख़याली शीशे को सामने रखकर ख़याली कंघी से अपने ख़याली बाल सँवारने लगे, इस प्रकार, जैसे शीशे में देख–देखकर बालों को ठीक कर रहे हों। जलसे का हॉल हँसी से गूँज उठा। 'ख़याली बाल' इसलिए कहता हूं कि पूज्य स्वामी जी के सिर के बाल न होने के बराबर हैं। संन्यास लेने से कई वर्ष पूर्व वे अपने सिर की हजामत अपने–आप बनाते थे। बाल काटने की एक मशीन उनके पास थी। उसी से किसी शीशे में देखे बिना अपने सिर पर बाल काट देते थे। बाल कुछ तो वैसे ही कम हो गये है, रहे–सहे वे हर दूसरे या तीसरे दिन मशीन से काट देते हैं। और स्वामीजी कहते रहे–)

अच्छी बात है यह। बाहर की सफ़ाई रखो अवश्य, परन्तु अन्दर की सफ़ाई का भी तो ध्यान रखो! बाहर

का बाल टेढ़ा हो गया तो आपको चिन्ता, मन टेढ़ा हो गया हो तो उसकी कोई चिन्ता नहीं। चेहरे पर मैल लग गई तो उसकी चिन्ता, हृदय पर मैल लग या तो उसकी चिन्ता नहीं। ऐसा नहीं करो। शारीरिक तप यह है कि बाहर और भीतर दोनों ओर से शुद्धि रखो।

और फिर **'आर्जवम्'** अर्थात् नम्रता। यह नहीं कि मनुष्य आटा लगे हुए रूमाल की तरह अकड़ा ही रहे–

दो दिन की ज़िन्दगी पे न इतना उछल के चल।
दुनिया है चल–चलाव का रस्ता सँभल के चल।।

सँभल के चल मेरे भाई, नर्मी से चल, अभिमान न कर, नम्रता से काम ले–

लेने को हरि नाम है, देने को कुछ दान।
तारन को है नम्रता, डूबन को अभिमान।।

इसलिए तरने की तैयारी कर, डूबने की तैयारी न कर। यह नम्रता बहुत बड़ा गुण है। बहुत बड़ा तप है।

एक बहुत साधारण, बहुत निर्धन–सा व्यक्ति था। साधारण पढ़ा–लिखा भी था; परन्तु निर्धन बहुत था। नौकरी की तलाश में बम्बई पहुँचा। और तो कोई नौकरी मिली नहीं, एक सेठजी के यहाँ झाड़ू देने पर नौकर हो गया। प्रतिदिन प्रातःकाल आता, लम्बी–चौड़ी दुकान में झाड़ू देता। दिन में भी कई बार सफ़ाई करता और जब भी खाली समय मिलता कोई–न–कोई किताब लेकर बैठ जाता। पढ़ता भी, लिखता भी। उसका लेख बहुत सुथरा था। सेठ ने एक दिन देखा; बोले, "अरे! तू लिखना जानता है?" वह बोला, "जी थोड़ा–थोड़ा लिख लेता हूँ।"

सेठजी ने उसे चिट्ठियाँ लिखने पर लगा दिया। अब वह खूब परिश्रम से खूब बना–सँवारकर चिट्ठियाँ लिखने लगा। उसके लिखने का, विषय को प्रस्तुत करने का ढंग बहुत सुन्दर था। चिट्ठी में हिसाब–किताब की बात आती तो उसे भी वह खूब अच्छी प्रकार समझा–बुझाकर लिखता।

सेठजी ने एक दिन ऐसा ही पत्र देखा; बोले! "अरे तू हिसाब–किताब भी जानता है?" वह बोला, "जी थोड़ा–बहुत जानता हूँ।"

सेठजी ने उसे मुनीम बना दिया। फिर उसके कार्य से प्रसन्न होकर हैड मुनीम बना दिया। अब दूसरे मुनीम जलने लगे।

जलने का यह गुण बहुत है हमारे अन्दर। किसी दूसरे व्यक्ति ने तीन मंज़िल का मकान बना लिया तो हम उसे देख–देखकर, दिन–रात जलते रहते हैं। बिना आग के जलते रहते हैं। ये मुनीम भी जलने लगे। दूसरी तो कोई बात उन्हें सूझी नहीं, सोचा सेठजी के कान भरेंगे, इसकी निन्दा करेंगे तो इस नये मुनीम की पदवी छिन जाएगी। परन्तु निन्दा करने की भी कोई बात नहीं मिली। वह सेठ के मकान में रहता था– दो कमरों में। एक कमरा खुला रहता था, एक बन्द। प्रतिदिन जाने से पूर्व वह इस बन्द कमरे में जाता, फिर थोड़ी देर पश्चात् बाहर निकल आता। ताला बन्द करके, ताली जेब में रखकर दुकान पर पहुँच जाता और प्रातः से रात्रि तक अपना काम करता रहता।

जलनेवालों को ऐसी कोई बात नहीं मिली जिसे वे सेठजी से कहें। तभी किसी ने उसे दुकान पर जाने से पूर्व इस बन्द कमरे में जाते देखा। सन्देह हुआ कि इस कमरे में क्यों जाता है? इसको बन्द क्यों रखता है?

बस, सेठजी के कान भरे जाने लगे, "यह हैड मुनीम बेईमान है, यह रुपया खा लेता है, हिसाब में गड़बड़ करता है। यह सेठजी का दिवाला निकाल देगा।"

सेठजी ने सुना तो कहा, "मैं इस प्रकार मानूँगा नहीं। मुझे पता है कि वह बहुत ईमानदार है। तुम लोग केवल ईर्ष्या के कारण ऐसा कहते हो।"

एक दिन वह बड़ा मुनीम उसी बन्द कमरे में गया; अन्दर पहुँचकर उसने द्वार बन्द कर लिया। दूसरे लोगों ने देखा तो दौड़े हुए सेठजी के पास पहुँचे; बोले, "चलो सेठ जी! चोर पकड़ा गया। वह बेईमान मुनीम इस समय अपने चुराये हुए रुपयों को गिन रहा है। इस समय चलिए, वह रुपयों के साथ पकड़ा जाएगा।"

सेठजी तेज़ी के साथ पहुँचे। देखा, सचमुच कमरे का द्वार अन्दर से बन्द है। गरजकर बोले, "कौन है अन्दर? दरवाज़ा खोलो!"

बड़े मुनीम ने आवाज़ दी, "मैं हूँ महाराज!"

दूसरे लोगों ने जलती आवाज़ में कहा, "देखिए, हम हम न कहते थे!"

सेठजी ने क्रुद्ध होकर कहा, "अन्दर क्या कर रहे हो? दरवाज़ा खोलो!"

बड़े मुनीम ने उत्तर दिया, "जी, कोई विशेष काम तो नहीं कर रहा।"

सेठ जी गरजे, "फिर दरवाज़ा खोलो!"

बड़े मुनीम ने कहा, "अच्छा अन्नदाता! थोड़ी देर ठहरिए, खोल दूँगा दरवाज़ा।"

सेठ चिल्लाए, "अभी इसी समय खोलो, नहीं तो हम दरवाज़ा तोड़ देंगे।"

बड़े मुनीम ने अन्दर से द्वार खोल दिया। सेठजी और दूसरे लोग कमरे में प्रविष्ट हुए। देखा कि वहाँ साधारण बाक्स के अतिरिक्त कुछ नहीं। सारा कमरा खाली है।

सेठजी ने कहा, "इस सन्दूक में क्या है?"

मुनीम जल्दी से सन्दूक पर बैठ गया। हाथ जोड़कर बोला, "अन्नदाता! यह मत पूछो। सन्दूक बन्द ही रहने दो।"

दूसरे लोगों ने कहा, "इसी में तो सब–कुछ है; इसलिए खोलने नहीं देता।"

सेठजी ने कहा, "क्या है इसमें? खोलो, हम इसे देखेंगे।"

मुनीम जी ने बैठे–बैठे कहा, "इसमें कुछ नहीं है महाराज! इसे न खुलवाइए। इसमें काम की कोई वस्तु नहीं है।"

सेठ ने कहा, "हट जाओ आगे से, हम इसे देखेंगे अवश्य।"

मुनीम की आँखों में आँसू आ गये। धीरे से वह उठा, एक ओर हो गया। सेठजी ने अपने हाथ से सन्दूक खोला। अन्दर देखा, आश्चर्य से पूछा, "अरे! यह क्या है?"

उसमें थी एक फटी हुई धोती, एक मैला–सा कुता, एक पुराना टूटा हुआ जूता।

सब लोगों ने उन वस्तुओं को देखा। कोई भी उनका अर्थ नहीं समझ सका। बड़े मुनीम ने हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर भूमि की ओर देखते हुए कहा, "ये वे वस्त्र हैं महाराज, जिन्हें पहनकर कई वर्ष पूर्व मैं इस नगर में आया था और आपकी सेवा में उपस्थित हुआ था; आपसे नौकरी देने की प्रार्थना की थी और आपने कृपा करके मुझे दुकान में झाड़ू देने की नौकरी दी थी। आपकी उस कृपा को मैं भूल न जाऊँ, मैं अपनी वास्तविकता को भूल न जाऊँ, मेरे हृदय में कभी अभिमान न जाग उठे, इसलिए प्रतिदिन प्रातःकाल दुकान पर जाने से पूर्व इन वस्त्रों को देखता हूँ और प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि प्रभो! मुझे अभिमान से बचा और मुझे शक्ति दे कि मैं अपने अन्नदाता की सेवा अधिक–से–अधिक परिश्रम और अधिक–से–अधिक ईमानदारी के साथ करूँ।"

सेठजी ने यह बात सुनी तो उसकी आँखों में आँसू आ गये। आगे बढ़कर उन्होंने मुनीमजी को अपनी छाती से लगा लिया; बोले, "धन्य हो मुनीमजी! तुम्हारी भाँति सब लोग करें तो दुनिया से पाप का नाश हो जाए क्योंकि अभिमान ही पाप का मूल है।"

यह है नम्रता की महिमा!

अरे ओ मानव! अपनी वास्तविकता को न भूल! बहुत अभिमान है तुझे, बहुत घमण्ड है कि मैं यह हूँ, मैं वह हूँ। मैंने यह कर दिया और वह कर दिया। अरे, यह अभिमान तुझे गिरावट की ओर ले जाएगा। इसे छोड़ और अपनी वास्तविकता को याद कर और यदि किसी दूसरे प्रकार से अपनी वास्तविकता याद न आये तो किसी बड़े नगर में, किसी मैडिकल कॉलेज में चला जा। वहाँ तुझे वास्तविकता दिखाई देगी। तार से लटकता हुआ हड्डियों का एक ढाँचा, सिर के स्थान पर खोपड़ी, आँखों के स्थान पर भयंकर गड्ढे, मुँह के स्थान पर भयानक जबड़े, रीढ़ की लम्बी हड्डी के साथ जुड़ी हुई पसलियाँ, लकड़ी की भाँति टाँग की हड्डियाँ। यह है आपकी वास्तविकता। इसके ऊपर थोड़ा मांस, थोड़ा चमड़ा, कुछ चर्बी, कुछ रक्त, कुछ नाड़ियाँ– अरे! किस बात पर अभिमान करता है? अन्त में तुझे भी इस स्थिति में पहुँचना है। यह शायद किसी सौभाग्यशाली का ढाँचा है जो दूसरों के काम आता है। तेरा ढाँचा भी शायद जलकर राख हो जाएगा। आग में हड्डियाँ टुकड़े–टुकड़े हो जाएगी। चौथे दिन लोग उन हड्डियों को ढूँढेंगे कि इकट्ठी करके किसी नदी में बहा दें। इतनी–सी बात पर इतना अभिमान न कर, मेरे भाई! इस संसार में आया है; सेठ ने कृपा कर दी तो अपनी वास्तविकता का ध्यान रख। नम्रता से काम ले। ईमानदारी के मार्ग पर चल।

परन्तु हे भगवान्! ये तो साढ़े नौ बज गये। समय हो गया। सज्जनो और माताओ, अब शेष बात कल करेंगे।

'भोज प्रबंध' का एक प्रसंग...

अब तक तो धरती यहीं रही

● प्रो. ओम कुमार आर्य,

कितनी ही किम्वदन्तियाँ, आख्यान, लोककथाएं आदि लोभ को पाप का मूल और उससे भी आगे पाप का बाप मानती हैं। आगे चलने से पूर्व हमें यह भी समझ लेना होगा कि 'पाप' क्या है? पाप की सरल–सी परिभाषा है कि–

'य पातयति स पापः' अर्थात् जो हमें गिराता है, हमारे पतन का कारण है, हमें पतनोन्मुख करता है ऐसा कोई भी कृत्य पाप की कोटि में आता है। अब बात और भी सरल हो गई, अर्थात् जितने भी अधम कोटि के, पैशाचिक, पाशविक, राक्षसी और आसुरी कुकृत्य मानव करता है उन सबके मूल में कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में 'लोभ' नामक मनोविकार छुपा होता है। विशेष करके हमारे यहाँ, और सामान्यतः विश्व में अन्यत्र भी, जो भ्रष्टाचार है, घपले–घोटाले हैं, शर्मनाक काण्ड हैं, मानवता के उजले मुख पर बदनुमा काले दाग और धब्बे हैं उनकी आसुरी जननी 'लोभवृत्ति' है उनका पिशाच–पिता 'लोभ विकार' है। लोभ के वशीभूत होकर ही हम ऐसे कुतिसत कुकृत्य करते हैं जो हमारे लिये पतन का कारण बनते हैं, लोभ के कारण ही हम मनुजता को त्यागकर दनुजता के कुपथ पर चल पड़ते हैं। और अन्ततोगत्वा पतन ही नहीं घोर विनाश के कगार पर जा पहुंचते हैं।

यहाँ यह लोककथा अप्रासंगिक नहीं है जो कहती है कि कोई जिज्ञासु किसी साधु के पास यह पूछने गया कि भगवन् मुझे बताइए कि 'पाप' का 'बाप' क्या है? साधु ने उस जिज्ञासु को नगर की एक गणिका के यहाँ जाने को कहा। जिज्ञासु पहले तो तैयार नहीं हुआ, किन्तु जब साधु ने बताया कि वह गणिका अवश्य है पर है बड़ी विदुषी, वह जाते ही तुम्हारी शंका का सही समाधान कर देगी, तो जिज्ञासु वहाँ चला गया। जब नगरनायिका ने देखा कि कोई अभ्यागत उसके द्वार पर खड़ा है तो उसने अपने अतिथि के आतिथ्य हेतु अर्ध्य, आचमनीय आदि प्रस्तुत किया। यह सब उसने चांदी की लघु थाली में सोने, चांदी के पात्रों में प्रदान किया था। किंतु अतिथि (जिज्ञासु) उसका आतिथ्य स्वीकार करने से सकुचा रहा था, क्योंकि वह एक गणिका थी, उसका आतिथ्य ग्रहण कर लेने से जिज्ञासु को लोकापवाद की आशंका थी। गणिका सब मामला क्षणभर में समझ गई और आदरपूर्वक बोली, "महोदय ये जो सोने, चांदी के पात्र हैं ये सब मैं अपने अतिथि को ही दक्षिणा में दे दिया करती हूं, कृपया आप निःसंकोच अर्घ्यादि स्वीकार करें और ये पात्र भी।" अतिथि ने उसका यह आतिथ्य ग्रहण कर लिया। और कहा "देवि, मैं तो यह जानने आया हूँ कि पाप का 'बाप' क्या है?" गणिका ने कहा, महाराज इस प्रश्न का उत्तर भी मैं दूंगी किन्तु अब तो भोजन का समय है, कृपया आप भोजन ग्रहण करें।" उसकी सेविका तुरंत सोने, चांदी के बहुमूल्य पात्रों में भोजन ले आई। नवागन्तुक फिर झिझक रहा था कि गणिका के यहाँ भोजन कैसे करूं? गणिका ने पुनः निवेदन किया कि "महाराज आये अतिथि का भोजनादि से सत्कार करना तो हमारी प्राचीन परंपरा है, भोजन ग्रहण करके मुझे कृतार्थ करें, और हाँ यह भी ध्यान रहे कि भोजन हेतु लाये गये ये सभी पात्र भी मैं दक्षिणा में अपने सम्मान्य अतिथि को ही दे देती हूँ। जिज्ञासु ने सुना, कुछ विचार किया और भोजन भी ग्रहण कर लिया। हस्त प्रक्षालन के पश्चात् फिर कहा, "भद्रे, मेरे प्रश्न का उत्तर अब तो दीजिए कि 'पाप' का 'बाप' क्या है? नगरवधू ने मुस्कुराकर कहा, "महोदय उत्तर मैंने दे तो दिया, एक बार नहीं दो बार दे दिया।" अभ्यागत ने विस्मयपूर्वक कहा, "आपने उत्तर कब दिया, आप तो अभी तक अतिथि–सत्कार में लगी हुई थी।" उस महिला ने कहा "तो अब सुनिये–

आप अर्घ्य, आचमनीय (जलादि) ग्रहण करने में संकोच कर रहे थे। जब आपको पता लगा कि ग्रहण कर लेने के बाद ये सभी बहुमूल्य पात्र भी आपके हो जाएंगे तो आपने स्वीकार कर लिया।

आप भोजन भी ग्रहण करने अनिच्छुक थे, लेकिन पात्र आपको दक्षिणा में प्राप्त होंगे, इस सूचना के तुरंत पश्चात् आपने भोजन भी ग्रहण कर लिया। क्यों? कहाँ गई आपकी झिझक, क्यों काफूर हुआ आपका संकोच, लोकापवाद का भय भी क्यों एकदम गायब हो गया? क्यों आपने वह सब किया जो आपकी दृष्टि में गलत था, बुरा था, पाप था? इसलिए किया कि आपके मन में लोभ का भाव उत्पन्न हो गया था कि क्या बिगड़ता है जल पीने से, क्या बुराई है भोजन ग्रहण करने में, जबकि ऐसा कर लेने मात्र से इतने सारे सोने–चांदी के पात्र मुझे (अतिथि को) दक्षिणा में प्राप्त हो जाएंगे। इस लोभ ने आपसे यह सब करवाया। इसलिए श्रीमन् 'लोभ ही 'पाप का बाप है।' पापस्य मूलं लोभः इति। इस दृष्टांत का दृाष्टान्त यही है कि मनुष्य मनसा, वाचा, कर्मणा जितने भी पाप–कर्म करता है उनके सबके मूल में लोभ का विकार विद्यमान होता है।

पाप हमारे लिये दुःख का कारण बनता है और दुःख विशेष अर्थात् घोर दुःख को ही नरक कहा जाता है। इसलिए गीताकार ने लोभ की गणना नरक के तीन द्वारों में की है–

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः। कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेत त्त्रयं त्यजेत्।। गीता 16/2/1

इस श्लोक में योगेश्वर श्रीकृष्ण ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि– काम, क्रोध और लोभ नर्क के द्वार हैं। नरक अर्थात् घोर दुःख (दुःख विशेष) जो कुपरिणाम है पाप का, पाप, कि जिसका जनक है, मूल है लोभ। इसलिये हमें 'लोभ' के विषांकुर अपने मनोक्षेत्र में कदापि–कदापि पैदा नहीं होने देने चाहिए। लोभ से हम सदैव कोसों दूर रहें। 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विध्दनम्' (यजु 40/1) कहकर वेद भी इसकी पुष्टि कर रहा है। छह पशुओं की अपनी–अपनी दुष्प्रवृत्तियों से भी मनुष्य को दूर रहने का उपदेश करते हुए अथर्ववेद भी गीध की महाभयंकर और घातक दुष्प्रवृतिः लोभ (लालच) से बचने का परामर्श देता है–

(....जहि....'गृध्रयातुम्' अथर्व 8/4/22 ऋग्वेद के अग्र निर्दिष्ट ये 8 मंत्र भी मंत्रान्त में 'अप नः शोशुचदधम्' ऋग्वेद 1/97/1–8 कहकर पापभावना को समूल नष्ट कर देने का उपदेश देता है, जो परोक्षतः यही संदेश देता है कि लोभ से बचो, पाप से अपने आप बचे रहोगे। लोभ के लिये अपने अंतःकरण में प्रवेश हेतु कोई छिद्र कहीं न छोड़ो, न लोभ आएगा, न पाप–भावना सर उठाएगी, जब बांस ही नहीं रहेगी तो बांसुरी कहाँ से बजेगी, कैसे बजेगी। लोभ खत्म, मनवाँ निष्पाप जीवन पाक–साफ, मोक्ष का मार्ग प्रशस्त। और इसी तथ्य की ओर संकेत कर रहा है 'भोज प्रबंध' में उल्लिखित वह प्रसंग जिसको आधार बनाकर मैंने शीर्षक दिया है.... 'मुञ्ज! त्वया यास्यति' अर्थात् अब तक तो धरती यहीं रही तू साथ इसे ले जाएगा। आइए, संक्षेप में देखें कि वह घटना क्या है और कैसे वह दर्शाती है कि मनुष्य क्यों पापकर्म करने को उद्यत होता है, कैसे उसकी आंखें खुलती हैं, वह पछताता है। क्यों? कैसे यह सब हो जाता है?

'भोज प्रबंध' का यह संदर्भित आख्यान बताता है कि जब महाराज भोज के पिता महाराज सिंधुल की मृत्यु हुई थी तब भोज बालक थे। महाराज सिंधुल ने अपने भाई मुञ्ज को अपने पास बुलाकर बालक भोज उनको सौंपा था और कहा था कि भोज को गुरुकुल भेजकर अच्छी शिक्षा दिलवाना, राजनीति, शस्त्रविद्या, धर्म–शिक्षा आदि में निष्णात भोज जब व्यस्क हो जाए तब राज्य उसे सौंप देना तब तक एक न्यास के रूप में राज्य तुम (मुञ्ज) संभालना। मुञ्ज ने महाराज सिंधुल को पूरी तरह आश्वस्त किया कि वह भोज को पुत्रवत समझेगा और यथासमय राजगद्दी उसे (भोज को) सौंप देगा। महाराज सिंधुल संसार से चले गये, मुञ्ज ने राज्य का दायित्व संभाला, बालक भोज को शिक्षार्थ गुरुकुल भेज दिया गय। कुछ समय तक तो सब ठीक–ठीक चलता रहा, किंतु बाद में सत्ता के असीम सुख, सत्ता से जुड़ी अन्य सुविधाओं, चाटुकारों की जी–हुजूरी, अभिवादन में झुकते अगणित सरों, आज्ञा पालन में तत्पर नौकर–चाकरों की लम्बी पंक्ति ने मुञ्ज का मानो दिमाग ही बदल दिया, कवि की यह उक्ति – **ऐसो को जन्मों जग मांहि प्रभुता**

पाय जाको मद नांहि। पूरी तरह मुञ्ज पर चरितार्थ होने लगी। उसके मन में सत्ता–लिप्सा, सत्ता भोगने का लोभ–सत्ता में बने रहने का लालच प्रबल से प्रबलतर और प्रबलतर से प्रबलतम होता चला गया। परिणामस्वरूप उसने निर्णय कर लिया कि अपने पथ का कांटा, रास्ते की रुकावट, भोज को रास्ते से हटाना ही होगा, उपाय–भोज का वध। जल्लाद बुला लिये गए, सारी योजना उनको समझा दी गई और उनको तुरंत भोज के पास गुरुकुल भेज दिया गया।

यह सब तो तय हो गया, किन्तु जल्लादों में सिंधुल के नमक के प्रति वफादारी अभी बाकी थी। भोज को उन्होंने कभी गोद भी खिलाया था, उसकी तुतलाती बोली, बचपन की डगमग डांवाडोल चाल, उसकी बाल सुलभ क्रीड़ाओं की बलैयां भी कभी ली थीं। वे भोज को कैसे मार सकते? किंतु उधर कठोर राजाज्ञा थी, राजा का भय था– भोज का वध तो उनकी मजबूरी थी। उन्होंने रास्ता निकाल लिया। भोज से कहा– युवराज हम तुम्हें मारेंगे नहीं, जंगली जानवरों की आंख, कान, नाक आदि दिखाकर मुञ्ज को आश्वस्त कर देंगे कि हमने भोज को वास्तव में ही मार दिया है। तुम अपना वध हो गया मानकर मरते वक्त का कोई संदेश अपने चाचा के नाम हमें लिखकर दे दो। क्योंकि हम जानते हैं कि मुञ्ज हमसे अवश्य पूछेंगे कि 'मरते वक्त भोज ने मेरे लिये (मुञ्ज) अवश्य ही कुछ कहा होगा। तब हम उनको तुम्हारा वह पत्र दे देंगे। तुरंत लिख दो ताकि हम अविलम्ब वापिस लौट जाएं और महाराज को तुम्हारे वध का समाचार दे दें। भोज ने बहुत सोच–समझ कर वह 'श्लोक' लिखा जिसको मैंने शीर्षक में संदर्भित किया है। जिसमें मुञ्ज की 'लोभ भावना' पर बड़ा करारा व्यंग्य था और जिसे पढ़कर मुञ्ज को अपनी भूल का बड़ा दुःखदायी अहसास हुआ, वह फूट–फूट कर रोया और जल्लादों से कहने लगा कि मेरा भोज मुझे वापिस लाकर दो। पहले देखिए वह

शेष पृष्ठ 5 पर ☞

सुख, शान्ति और समृद्धियों का आधार सत्य

● डॉ. अशोक आर्य

मानव जीवन में मनुष्य सदा से ही सुखों की खोज करता रहा है! प्रत्येक व्यक्ति सुख प्राप्ति के लिये इधर–उधर भटकता रहता है, किन्तु सुख उसे कुछ भी नहीं मिलता! क्या कारण है जिस सुख को पाने के लिए वह अनेक स्थानों पर भटक रहा है, नदियों, नालों, पर्वतों व जंगलों की खाक छान रहा है, किन्तु सुख उसे तो भी नहीं मिल पा रहा, अपितु वह जितना सुख के पीछे भाग रहा है, सुख उससे उतना ही दूर जा रहा है! क्या कारण है? जब हम इस दूरी का कारण खोजने का प्रयास करते हैं तो हमें पता चलता है कि जिस सुख को खोजने के लिए हम इधर उधर–भटक रहे हैं, वह सुख कोई खोजने से मिलने वाली वस्तु नहीं है। सुख तो प्रयास से अर्जित होता है। इसे पाने के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। यदि हम अपने जीवन में काम ऐसे करें, जिनसे दु:ख मिले तो सुख की कामना मात्र से क्या होगा,? जबकि हमने सुख प्राप्ति का कार्य तो किया ही नहीं! जब तक हम सुख पाने के लिए पुरुषार्थ नहीं करेंगे, तब तक तोते की भान्ति चाहे सुख–सुख शब्द की जितनी चाहे माला फेर लें, कुछ होने वाला नहीं है! परम पिता परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में मानव मात्र के लिए चार वेदों का ज्ञान दिया है! इस ज्ञान में ही सुख प्राप्ति का मूल मन्त्र दिया है! वेदों में यत्र–तत्र ऐसे अनेक मन्त्र मिलते हैं, जिनसे मार्गदर्शन पाकर हम सच्चे सुख को पाने की सिद्धि पा सकते हैं! अतः आओ हम वेद से ऐसे मन्त्रों को खोजकर सच्चे सुख को पाने का मार्ग प्राप्त करने का प्रयास करें। इस मार्ग से सफलता निश्चित रूप से मिलेगी!

वेद में सुख, समृद्धि, धन ऐश्वर्य प्राप्ति का साधन सत्य को बताया है, सत्य पर ही संसार टिका हैं, साथ ही संसार का आधार है। सत्य नहीं तो कुछ भी नहीं। अथर्ववेद के मंत्र 14.1.1 में इस तथ्य की ओर ही इंगित करते हुए इस प्रकार कहा है–

सत्यनोनभिता भुमिः सूर्येनोनभिता द्यौः।
ऋतेनादित्यास्तिष्टन्ति दिवि सोमो अधि श्रितः!! अथर्व, 14.1.1!!

इस मन्त्र में सत्य की अत्यन्त मार्मिक व्याख्या करते हुए कहा गया है कि मात सत्य ही है जिस पर यह पृथ्वी टिकी है। इतना ही नहीं सूर्य से द्युलोक टिका है। किंतु सूर्य को भी टिकने का कुछ तो आधार चाहिए ही, अन्यथा वह कैसे टिक पाएगा। वेद इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहता है कि यह भी सत्य ही है कि जिस पर सूर्य भी टिका है! सत्य अर्थात् सोमगुण से भरपूर वह परमात्मा द्युलोक में व्याप्त है! अतः यह सत्य ही है जो पृथ्वी का आधार है, विश्वास है, इसी से ही प्रेम का बीज अंकुरित होता है! इस सत्य से ही मनुष्य दृढ़ बनता है तथा सर्वत्र विश्वास व सफलता अर्जित करता है! जब हम सोम को प्राप्त करते हैं तो हम पाते हैं कि यह भी सत्य का ही आनन्द–स्वरूप है! सत्य ही सब प्रकार के ज्ञान का केन्द्र है! इस प्रकार वेद मन्त्र हमें बताता है कि जब सत्य ही सब कुछ हमें दे सकता है,तो हम इस सत्य को क्यों न अपनाएं?

ऋग्वेद ने तो सत्य को सब प्रकार के सुखों को आधार बताते हुए इस प्रकार कहा है:–

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु
शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः!
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः,
शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु!! ऋ. 7.35.2!!

इस मन्त्र में हमारे कल्याण व सुख–समृद्धि, कीर्ति व ऐश्वर्य की कामना करते हुए कहा है कि यह सब हमारे लिए सुखदायी हों! सत्य व संयम तो हमारे लिए सुखदायी हों ही, इसके साथ–ही–साथ न्याय व उदारता का देवता, जो अर्यमा के नाम से जाना जाता है, वह भी हमें सुख देने का साधन बने!

इससे आगे चल कर इस मन्त्र के माध्यम से हम पुनः परम पिता से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि 'हे! प्रभु सत्य के रक्षक जितने भी देवगण हैं, वह सब हमारे लिए कल्याण के कार्य करें! यह ऋग्वेद का 7–35–12 मन्त्र है, जो इस प्रकार है:–

शं नः सत्यस्य पत्यो भवन्तु,
शं नो अर्वन्तः शमु सन्तुगावः!
शं नः ऋभ्वः सुकृतः सुहस्ताः,
शं नो भवन्तु पित्रो हवेषु!! ऋ. 7.35.12!!

जो देवता सत्य के रक्षक हैं, वह सब हमारे लिए कल्याणकारी हों! हे प्रभु! हमारे यह घोड़े तथा गायें भी हमारा शुभ करने वाली हों, हमारा कल्याण करने वाली हों! सत्यकर्मों में सदा रत रहने वाले कर्मशील, सिद्धहस्त शिल्पी गण हमारे लिए सुखदायक शिल्प के कार्य करते रहें! हमारे पितृगण सब यज्ञों में हमें सुख दें।इस प्रकार यह मन्त्र इस बात को स्पष्ट करता है कि जीवन में सत्य के साथ–ही–साथ पुरुषार्थ की भी आवश्यकता होती है! शिल्प से आत्म–निर्भरता आती है, जो सुख का साधन है! अतः जीवन में सत्य व सत्कर्म को आधार बनाते हुए शिल्प अर्थात पुरुषार्थ द्वारा विशेष योग्यता अर्जित कर आजीविका के साधनों को बढ़ाना ही सत्य की उपयोगिता है!

वेद कहता है कि जब हमारा जीवन सत्य व संयम पर आचरण करते हुए कार्य करेगा तो हमें सब ओर से सुख व शान्ति मिलेगी! यह तथ्य ऋग्वेद के मन्त्र 7–35–2 में स्पष्ट किया गया है! मूल मन्त्र इस प्रकार है:–

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु
शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः!
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः
शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु!! ऋ. 7.35.2!!

इस मन्त्र में प्रभु से हमारे लिए कल्याण की कामना करते हुए कहा गया है कि– हे प्रभु! ऐश्वर्य का देवता भी हमारे लिए कल्याणकारी हो! कीर्ति अथवा यश, धन या ऐश्वर्य तथा समृद्धि भी हमें सुख देने वाली हों। सत्य व संयम की प्रशंसा भी हमें सुख व कल्याणकारी हो! उदारता जिसे हम न्याय का अंग मानते हुए देव अर्यमा के नाम से जानते हैं, वह भी सुख देने वाला हो।

भाव यह है कि प्रत्येक मनुष्य सुख व शान्ति का अभिलाषी होता है! अतः वह सदा वही साधन अपनाता है जिससे उसे सुख व शान्ति मिले! ऐसे साधनों में एक है सत्य, इससे जीवन में स्थिरता का प्रकाश होता है! जिससे मानव में उदारता जागृत होती है! उदारता जागृत होने से सद्भावना की वृद्धि होती है! अब संयम अपनाने से जितेन्द्रियता आती है, जो शक्तियों को संयमित कर तेजस्विता पैदा करती है! इससे हम उन्नति के विकास के मार्ग में अग्रसर होते हैं, जीवन का नवनिर्माण होता है।

इस प्रकार वेद के इन मन्त्रों में बताया गया है कि सत्य पर आधारित संयम से सुख, शान्ति व सब प्रकार की समृद्धियां मिलती हैं, क्योंकि सत्य सारे संसार का आधार है! सत्य पर चलने से हम संयमी बनते हैं तथा सब प्रकार के दु:खों से छूट जाते हैं, सत्य से हमें प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलती है! सत्यशील के देवता भी सहयोगी बन जाते हैं तथा यही भव सागर से पार उतरने का उत्तम साधन है! जिस सत्य के इतने लाभ, इतने गुण हैं, उसे अपनाने में हमें सदा खुश होना चाहिए, सत्यव्रती बनना चाहिए, सफलता निश्चय ही मिलेगी।

104–शिप्रा अपार्टमैंट, कोशाम्बी
(गाजियाबाद) उ.प्र.
चलवार्ता 09718528068

☞ पृष्ठ 4 का शेष

अब तक तो धरती...

श्लोक क्या कहता है–

मांधाता च महीपति कृत युगालंकार भूतो गतः
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यान्तकः
अन्य च युधिष्ठिर प्रमृतयो याता दिवं भूपते
न के नापि संम गता वसुमती, मुञ्ज! त्वया–यास्यति।।

अर्थात् सतयुग भूषण मांधाता महीपाल भी आखिर चले गये, लंकेश सहांरक रामबली भी काल के हाथों छले गये, कर्ण, युधिष्ठिर, भीम गये, यह बात किसी से छुपी नहीं आज तलक धन दौलत, धरती साथ किसी के गई नहीं कहे भोज, हे मुञ्ज चचा तू नया कमाल दिखाएगा अब तक तो धरती यहीं रही तू साथ इसे ले जायेगा।

मुञ्ज, त्वया यास्यति।।

यह था लोभ का विकार और आगे उसका डरावना, दुष्परिणाम– अपने प्रिय, पुत्रवत् भतीजे भोज के वध का आदेश। इस 'पाप' का 'बाप' था मुञ्ज के मन में पैदा हुआ सत्ता का लोभ, राज–गद्दी के प्रति लालच। जनश्रुति है कि मुञ्ज ने जल्लादों को अभयदान दिया, जल्लाद भोज को वापिस लाये, मुञ्ज ने उसको सीने से लगाया, उसको राज्य सौंपा और स्वयँ (मुञ्ज) तप करने जंगल को प्रस्थान कर गये और आने वाली पीढ़ियों के लिये छोड़ गये एक संदेश कि 'लोभ' पाप का मूल है, पतन का 'हाईवे' है, मानवता को कलंकित कर देने वाले काले कारनामों का एकमात्र कारण है। सबके लिए कल्याणी, पुनीत वेदवाणी ने तो सृष्टि के आदि में ही सावधान कर दिया था–

जो कुछ दीख रहा जगती में, सब में ईश समाया है
त्याग भाव से जीवन जीना, यह ढलती, फिरती छाया है।
मोह–ममता के वशीभूत क्यों करता मेरा–मेरा है
भूल गया कि जगत् बावरे चिड़िया रैन बसेरा है
अति लोभ में कभी ने फंसना ऋषियों ने फरमाया है
किसके साथ गई बोलो नश्वर माया और काया है।

(द्रष्टव्य ईशोपनिषद् प्रथममंत्र)

आइए, हम लोभ के विषांकुर को अपने मन में से उखाड़ फैंकं, लोभ–दैत्य को निर्ममतापूर्वक कुचल–मसल कर मार डालें और इस प्रकार पूर्णतया निष्पाप होकर पावन पवित्र जीवन जीयें। लोभ–पाप का बाप है, पाप हमसे कुकृत्य करवाता है, जीवन को दु:खों से भर देता है। हम लोभ से बचें, दु:खों से बचना आसान हो जाएगा।

1607/7 जवाहर नगर,
पटियाला चौंक, जींद
(हरियाणा)–126102
मो. 09416294347,01681–226147

दयानन्द : जैसा मैंने समझा

● महात्मा चैतन्यमुनि

हे! ऋषिवर! आप धरा पर जिस समय अवतरित हुए, उस समय चारों ओर पाखण्ड और आडम्बर फैला हुआ था। लोग धर्म के स्वरूप को भूल चुके थे, एक परमात्मा के स्थान पर पत्थरों और व्यक्तियों की पूजा हो रही थी। आर्यों को आलस्य और प्रमाद के कारण वेद का पढ़ना–पढ़ाना तथा सुनना–सुनाना लुप्त हो गया था। मातृशक्ति को पढ़ने–पढ़ाने का अधिकार नहीं था। छुआछूत का कोढ़ समाज को जर्जर कर रहा था। भारत मां परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी। हिन्दू लोग धड़ाधड़ विधर्मी बनकर राष्ट्र–भक्ति से विमुख हो रहे थे। मृतप्राय समाज एवं राष्ट्र को संजीवनी पिलाने वाला कोई नहीं था। इन समस्त बुराइयों से लड़ना तो दूर रहा इन्हें समूल नष्ट करने की कल्पना तक करने वाला भी कोई नहीं था। ऐसे विकट समय में आपने समूल सुधार का बीड़ा उठाकर अनुपम साहस का परिचय दिया। गुरु विरजानन्दजी को अपना समूचा जीवन समर्पित करने के बाद आपने स्थान–स्थान पर जाकर शास्त्रार्थ किए। अनेकों प्रवचन दिए तथा व्यक्तिगत रूप से भेंटें करके अनेक लोगों का पथ–प्रदर्शन किया। यही नहीं आपने सत्यार्थ–प्रकाश, संस्कार–विधि, आर्यभिविनय, गोकरूणानिधि, ऋग्वेदादिभाष्य–भूमिका, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्य–रत्नमाला, पंचमहायज्ञ विधि आदि अनेक अद्भुत ग्रन्थों की रचना की।

हे योगेश्वर! आप अद्भुत योगी थे। टंकारा की धरती को त्यागते समय आपके दो ही सपने थे– सच्चे शिव को प्राप्त करना तथा मृर्त्युजीबनना। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आपने घोर तपस्या की। आपने योग की अनेकों सिद्धियां प्राप्त की हुई थीं मगर आप इतने लोकेषणा रहित थे कि आपने अपनी यौगिक सिद्धियों का कही पर भी, किसी प्रकार का प्रदर्शन आदि नहीं किया। आप आदित्य ब्रह्मचारी थे। आपके ब्रह्मचर्य की शक्ति का लोगों ने कई बार प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया। संसार में और भी अनेकों ब्रह्मचारी हुए मगर हनुमान जी ने श्रीराम की सेवा करने के लिए ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया। परशुराम ने इक्कीस बार क्षत्रियों का संहार करने के लिए, भीष्म ने अपने पिता की तुच्छ कामना को पूरा करने के लिए ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया मगर आपने अपने गुरु की आज्ञा मानकर संसार के उपकार के लिए यह व्रत धारण करके अपने आपको आर्ष ग्रन्थों के प्रचार–प्रसार तथा समाज और राष्ट्र–सेवा के लिए अपना समूचा जीवन आहुत कर लिया। जीवन में एक क्षण के लिए भी आपको कामवासना उद्वैलित नहीं कर पाई। आप सत्यवादी थे। आपके जीवन में कितनी ही बार, कितने ही प्रलोभन आए मगर आप कभी भी असत्य के पक्षधर नहीं बने। प्रभुभक्त होने के कारण आप में अद्भुत सहनशक्ति तथा निर्भीकता थी। आप दयालुता और परोपकार की साक्षात् मूर्ति थे। मानव तो मानव आपसे किसी पशु का दर्द भी नहीं देखा जाता था। जीवन भर अपने साथ उपकार करने वालों को सदा क्षमा ही करते रहे। यहां तक कि अन्त में जिस जगन्नाथ नामक व्यक्ति ने जहर दिया, संसार से प्रयाण करने से पूर्व उसे भी अपने पास से धन देकर नेपाल की ओर भाग जाने की प्रेरणा दी, ताकि वह पकड़ा न जा सके। आप सच्चे समाज सुधारक थे। आपकी ही प्रेरणा से महिलाओं के लिए विद्या ग्रहण करने के दरवाजे खुले। अछूतों को उनके अधिकार व सम्मान दिलाने वाले आप ही थे। आपने सतीप्रथा तथा बालविवाह और बलि–प्रथा आदि कुप्रथाओं का प्रबल विरोध किया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया। पाखण्ड और आडम्बरों को जड़–मूल से उखाड़ने के लिए आपने स्वयं को पूर्णतः झोंक दिया। आप पहले व्यक्ति थे जिन्होंने धर्म को आचरण के साथ जोड़ने की बात कही, अन्यथा धर्म मात्र बाहरी पहरावे और चिन्ह आदि धारण करने तक ही सीमित हो गया था। आपने जिस सामाजिक सुधार का मार्ग प्रशस्त किया था, उसे आगे बढ़ाने के लिए आपके शिष्यों ने अपने आपको आहुत कर दिया तथा पण्डित लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, पण्डित गुरुदत्त आदि अनेक मनीषियों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। आपने प्राचीनतम शिक्षा पद्धति के जो सूत्र प्रस्तुत किए थे उन्हें कार्यान्वित करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा हंसराज आदि ने सहर्ष आप को होम कर दिया। आर्यसमाज का ऐसा स्वर्णयुग आया कि इस संस्था ने चारों ओर अपने कार्यों की धूम मचा दी तथा आर्यों के नाम एक आदर्श के रूप में लिए जाने लगे।

हे महामानव! आपने लोगों को पुनः परमात्मा के ज्ञान अर्थात् वेदों की ओर लौटने का न केवल आवाह्न किया, बल्कि अपने प्रबल तर्कों और प्रमाणों के आधार पर वेदों को परमात्मा द्वारा दिया गया ज्ञान भी सिद्ध किया। वेद के नाम पर जो कुछ भी अनर्गल व अप्रासंगिक हो रहा था आपने अपने वेद–भाष्य के द्वारा उन सब आपेक्षों का निराकरण कर दिया। आपने निरुक्त के आधार पर वेदों का पारमार्थिक और व्यावहारिक पक्ष रखकर वेद के सम्बन्ध में प्रचलित समस्त भ्रान्तियों को दूर करने का ऐतिहासिक कार्य किया। आपने यह सिद्ध करके बता दिया कि वेद में बहुदेवतावाद, लौकिक इतिहास तथा अप्रासंगिक एवं अनित्य विनियोगवाद नहीं है। आपने अज्ञानी लोगों को बताया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है,इसलिए उनका अर्थ परमात्मा के गुण–कर्म–स्वभाव के विपरीत नहीं किया जाना चाहिए, वह सृष्टि–नियम के विरुद्ध नहीं होना चाहिए, वह मानव उन्नति में सहयोगी होना चाहिए, वह गुरुकुल, तर्कानुमोदित, बुद्धिसंगत होना चाहिए। आपने वेदों को समझने की जो आंख दी, उससे वेद निन्दक भी वेदों को गडरियों के गीत कहना छोड़कर प्राचीनतम ग्रन्थ, समस्त ज्ञान–विज्ञान को पुस्तक तथा ईश्वरीय ज्ञान कहने को बाधित हुए। आपने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध क्रान्तिकारी अरविन्द घोष जी ने कहा–'वेदों के रहस्यों को खोलने की सही कुंजी यदि किसी के पास थी तो वह केवल दयानन्द के पास थी...वेदों में विज्ञान की ऐसी बातें भी हैं जिनका पता आज के वैज्ञानिकों को नहीं... दयानन्द ने वेदों में निहित ज्ञान के विषय में अत्युक्ति नहीं बल्कि अल्पोक्ति से काम लिया है...'

हे योगीराज! आप में राष्ट्र–भक्ति कूट–कूट कर भरी हुई थी। आपने अठारह सौ सतावन के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई थी, इस बात के आज कितने ही प्रमाण मिल रहे हैं। कुछ कारणों से वह क्रान्ति सफल नहीं हो सकी मगर उससे आप निरुत्साहित नहीं हुए, बल्कि आपने उन कारणों को खोजा, जिनके कारण वह असफलता मिली थी और उन कारणों को दूर करने के लिए कृत–संकल्प हो गए। जन–चेतना के लिए आपने सामाजिक सुधार का कार्य हाथ में लिया था। आप निर्भीक शब्दों में स्वतन्त्रता की मांग करने वाले प्रथम व्यक्ति थे। अपने ग्रन्थ सत्यार्थ–प्रकाश में आपने स्वराज्य की बात कही, अनेक ग्रन्थों में विदेशी राज्य के समूल नाश की कामनाएं कीं तथा अंग्रेज अधिकारी के मुंह पर ही स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि मैं तो परमात्मा से रात–दिन यह प्रार्थना करता हूँ कि मेरे राष्ट्र को विदेशी राज्य से शीघ्र मुक्ति मिले। सभी समाज सुधारकों तथा अग्रणी नेताओं ने इस बात को स्वीकारा है कि आप ही स्वतन्त्रता के प्रथम प्रणेता तथा राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत थे। यह बात अक्षरशः सत्य है कि यदि आपने अपने देशवासियों को स्वराज्य प्राप्त करने की प्रेरणा न दी होती तथा आर्यसमाज की स्थापना न की होती तो भारत पन्द्रह अगस्त, 1947 को स्वतन्त्र न हो पाता। आर्यसमाज एक ऐसी क्रान्ति बनकर उभरा कि आर्यसमाजी होने का अर्थ ही होता था– क्रान्तिकारी। बालगंगाधर तिलक जी के शब्द हैं कि– स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, यह प्रेरणा उन्हें आपके ग्रन्थ सत्यार्थ–प्रकाश से मिली। जिन लाला लाजपत राय ने स्वतन्त्रता के लिए स्वयं को आहुत कर दिया उनके शब्द हैं– 'आर्यसमाज मेरी धर्म की मां और महर्षि दयानन्द मेरे पिता हैं। उनकी शहीदी पर जिन क्रान्तिकारियों ने इस हत्या का बदला लेने की प्रतिज्ञा तथा उस जालिम को मौत के घाट उतारा जिसने लालाजी पर लाठियां बरसाई थीं, उनमें भक्तसिंह प्रमुख थे। मेरे गुरुदेव! भक्तसिंहजी का पूरा परिवार सरदार अर्जुनसिंह, किशनसिंह, अजीतसिंह आदि आपकी राष्ट्रवादी विचारधारा के कारण ही क्रान्तिकारी बना था। अनेक क्रान्तिकारियों के प्रेरणा स्रोत पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल जी अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि सत्यार्थ–प्रकाश ने ही उन्हें क्रान्तिकारी बनाया। चन्द्रशेखर आजाद आपके ग्रन्थ आर्यभिविनय का जब तक पाठ नहीं कर लेता था वह प्रातराश नहीं करता था। यही नहीं हे सन्त शिरोमणि! आपके ही परम शिष्य पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा ने विदेश जाकर 'भारत–भवन' की स्थापना की थी जहां वीर सावरकर, मदन लाल ढींगरा, लाला हरदयाल आदि इनके शिष्य बने तथा विदेश में भी क्रान्ति की ज्वाला को प्रज्जवलित रखा। भाई परमानन्द तथा भाई बालमुकुन्द आदि अन्य अनेकों क्रान्तिकारियों के प्रेरणा–स्रोत आप और केवल आप ही थे...हे पवित्रात्मा! आपने स्वयं बोध प्राप्त करके संसार को परमात्म–बोध दिया। आत्म–बोध दिया, मानव–बोध, समाज–बोध, वेद–बोध, कर्म–बोध, धर्म–बोध, शिक्षा–बोध, साहित्य–बोध, भाषा–बोध, अर्थ–बोध तथा ज्ञान बोध बोध राष्ट्र–बोध दिया। हे तर्क–शिरोमणि! बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न! जीवन का ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं जिसका दिशानिर्देश आपने न दिया हो। आपसे अधिक तो क्या हमें तो इतिहास में आप जैसा भी कोई महापुरुष दिखाई नहीं देता है। श्री अरविन्द जी ने इसलिए पहाड़ों की चोटियों से तुलना करते हुए आपको सर्वोच्च शिखर की उपमा दी है। वास्तविकता यह है कि आपकी किसी से तुलना ही नहीं की जा सकती है.... आप अतुलनीय हैं....

हे अनुपम मनीषी! आपने कभी अपनी विद्वता का या योग का प्रदर्शन नहीं किया और न ही किसी नए मत या सम्प्रदाय की स्थापना की। आपने अलग से न तो

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् – चुनौतियाँ एवं सुझाव

● नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

पूरे विश्व को आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाने के कान्तदर्शी देव दयानंद के स्वप्न को साकार करने का दायित्व दयानंदी परिवार के सदस्य कहने वाले आर्यों पर है। इस गुरुतर कार्य में हम कितने सफल हो पा रहे हैं इसके लिए हमारे समक्ष क्या चुनौतियां हैं तथा इन चुनौतियों से निबटने के लिए हम कितने प्रयास कर पाने में सक्षम हैं यह एक चिंतन करने का विषय है। जिस प्रकार किसी रोग के इलाज से पूर्व डॉक्टर उसका ठीक प्रकार से आकलन करता है फिर उसके लिए आवश्यक दवा का प्रयोग करता है। आज कृण्वन्तो विश्वमार्यम' के लक्ष्य को प्राप्त करने के रास्ते में आने वाली चुनौतियों को समझकर उनका सामना करने के लिए स्वयं को तैयार करना होगा। इस पर विस्तार से चर्चा करते हैं।

1. क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना एक आन्दोलन के रूप में की थी। एक ऐसा आन्दोलन जो समाज में व्याप्त सभी अन्धविश्वासों, पांखडों, कुरीतियों से मुक्ति दिलवाकर सबका समर्थन और विस्तार पाता था। उस समय नारी शिक्षा, पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बालविवाह, जाति प्रथा, कितनी सामाजिक बीमारियों से समाज को मुक्त करवाने का श्रेय आर्य समाज को जाता है।

परन्तु आज यह सभी बुराईयां नए–नए स्वरूपों में समाज में व्याप्त हैं। कन्याभ्रूण हत्या, नारी विमर्श के नाम पर नग्नता, बालविवाह, बंधुआ मजदूरी, भ्रष्टाचार आदि कितनी बीमारियां समाज में अपने भयावह स्वरूप में विद्यमान हैं। क्या आर्य समाज ने कभी आन्दोलन के रूप में अग्रणी भूमिका निभाते हुए इनके विरुद्ध संघर्ष का शंखनाद किया। हम शायद दूसरों द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलनों के पिछलग्गू बनकर अपनी पहचान खोते रहे।

2. महर्षि देव दयानन्द ने धार्मिक पांखडों, आडम्बरों और तथाकथित धर्म के ठेकेदारों का खुला पुरजोर विरोध पाखंड खंडन द्वारा किया। चाहे उसके लिए उन्हें कितनी बार विष दिया गया, अपमान सहने पड़े। परन्तु आज आर्य समाजों में आने वाले विद्वानों को खंडनात्मक बात ना कहने की सलाह इस डर से देते हैं कि लोग नाराज हो जाएंगे। आर्य सिद्धांतों के मंडन के साथ–साथ पाखड खंडन भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भोली–भाली जनता को भेड़ों की तरह मूंडकर स्वयं को ईश्वर या ईश्वरीय अवतार घोषित कर चुके पाखंडी बाबाओं का पोल खोल अभियान आर्य समाज को चलाना होगा। लोगों को पाखंडी ढोंगी बाबाबों से बचाकर हम उनका विश्वास अर्जित करके उनमें आर्य सिद्धांतों का प्रचार कर सकते हैं। निर्मल बाबा, पाल दिनाकरण, रामपाल दास जैसे पाखंडियों के विरुद्ध आर्य समाज को आंदोलन करना चाहिए। गंदगी की सफाई का अपना विशेष महत्व है।

3. महर्षि दयानन्द ने जन्म आधारित जाति व्यवस्था का विरोध करके सामाजिक समरसता का संदेश दिया और आर्य समाज के ओ३म ध्वज तले सभी को एक सूत्र में बांध दिया। आज की राजनैतिक व्यवस्था में सत्ता प्राप्ति के लिये राजनेताओं ने 'फूट डालो राज करो' की अंग्रेजी नीति पर चलते हुए समाज को जातियों के कबीलों में बांट डाला है। राजनीति समाज को तोड़ती है परन्तु सच्चा वैदिक समाज को जोड़ता है। आर्य समाज को आर्य सिद्धांतों का प्रचार प्रसार करके जातियों के बंधन को तोड़ना होगा और सभी को दयानंदी आर्य परिवार के सूत्र में पिरोना होगा।

4. समाज में अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए तथाकथित अगड़ी जातियों के दबंग दलित वर्ग पर अत्याचार करके उन्हें दबाकर रखते हैं। वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था में इस कुप्रथा को स्वीकार्यता मिली हुई है। जन्म आधारित जाति का विरोध करके दलितों– शोषितों पर हो रहे अत्याचारों का विरोध आर्य समाज को करना होगा। जाति ना पूछो साधु की... जातिगत भावना से ऊपर उठकर विद्वानों का सम्मान करना होगा। स्वामी श्रद्धानन्द की भांति अछूतोद्धार का कार्य हाथ में लेकर सामाजिक समरसता को स्थापित करना होगा।

5. आर्य समाज को भवन में हवन के इर्द–गिर्द सिमटते देख अक्सर भविष्य की चिंता में डर लगता है। यज्ञ की व्यापक परिभाषा को समझकर यज्ञीय अर्थात् परोपकार के कार्य करते हुए अपना जीवन यज्ञमय बनाकर आर्यों को अपने व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण पैदा करना होगा, ताकि लोग आर्य सिद्धांतों की ओर आकर्षित हों। पहले स्वयं आर्य बनें, फिर दूसरों को आर्य बनने की प्रेरणा दें।

6. आर्य समाज के भवनों को हड़पने की बदनियती से हर हाल में पद पर चिपके मठाधीशों से आर्य समाजों को मुक्त करवाना होगा, ताकि नए युवा लोगों को काम करने का मौका मिल सके और अधिक– से–अधिक लोग आर्य समाज से जुड़ सकें। अनेकों आर्य समाजों में वर्षों से प्रधान पद पर कब्जा किए बैठे ऐसे लोग अपनी जोड़–तोड़ की राजनीति से आर्य प्रचार–प्रसार की हानि कर रहे हैं।

7. आर्य समाजों के भवन बस सुबह के हवन के बाद बंद हो जाते हैं। इनका अधिकतम उपयोग वेद प्रचार एवं अन्य सामाजिक कार्यों के लिए किया जाना चाहिए। इनमें योग कक्षाएं हवन, आर्य कुमार सभाएं, आर्य युवा संगठनों की शाखाएं, धर्मार्थ औषधालय, सिलाई प्रशिक्षण इत्यादि कार्य निरन्तर नियमित रूप से चलाए जा सकते हैं। आर्य समाज सै. 19 फरीदाबाद भवन का बहुआयामी उपयोग सभी के लिए अनुकरणीय है।

8. आर्य संगठनों में फूट का राज रोग दीमक की भांति लग चुका है जिसके कारण समाज की दशा निरंतर खोखली होती जा रही है। फूट के इस राज रोग का इलाज आपातकालीन ढंग से करना होगा और इसके लिए शीर्ष आर्य संन्यासियों, विद्वानों को पहल करनी होगी।

9. आर्य कर्मकांडों में पुरोहितों को एकरूपता लाने की नितान्त आवश्यकता है, इसके लिए धर्मार्थ सभा को पहल करके सभी विद्वानों को एक निश्चित निर्णय पर पहुंचने के लिए प्रेरित करना पड़ेगा। सभी कर्मकांडों में आर्य पुरोहितों द्वारा संस्कारों में एकरूपता से आम जनता का विश्वास आर्ष पद्धति पर बढ़ेगा।

10. निःस्वार्थ भाव से आर्य सिद्धांतों का प्रचार–प्रसार करने वाली दयानंद के दीवानों की फौज तैयार करनी होगी। इसके लिए पारिवारिक दायित्वों से निवृत्त हो चुके वानप्रस्थियों, विरक्त हो चुके संन्यासियों के साथ–साथ समर्पित युवाओं को आगे आना होगा। इसके लिए आर्य संगठनों को एकजुट होकर प्रयास करना पड़ेगा।

11. आर्य विद्वानों, संन्यासियों, प्रचारकों, युवा संगठनों के अधिकारियों का पूरा मान सम्मान करना हम सभी आर्यजनों का दायित्व बनता है। बड़े–बड़े भवन और हवन से आर्य जनता से एकत्रित धन को केवल बैंकों में रखकर उसके सूद से खर्च चलाना और फिर उन भवनों तथा एकत्रित कोष का झगड़े का कारण बनने से कहीं अच्छा है, इस धन का सदुपयोग आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए किया जाए। आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद पंजी. इसका अच्छा उदाहरण है जिसने आर्य प्रचार के कार्यक्रमों के नए कीर्तिमान स्थापित किए।

12. जहां एक ओर आर्य विद्वानों का सम्मान–सत्कार करना होगा, आर्य जनों का कर्तव्य हैं, वहीं आर्य पुराहितों को भी दक्षिणानन्द बनने की प्रवृत्ति से बचना होगा। इसके लिए आर्य समाजों व संगठनों का दायित्व बनता है कि वे अपने विद्वानों को धन की कमी के कारण रूकने न दें। आर्य विद्वान दीपक में जल रही बाती के समान हैं, हमें उसमें तेल की कमी से जलकर बाती को नष्ट होने से बचाना होगा। आर्य विद्वानों को परिवार के दायित्वों से निश्चिंत होकर प्रचार–प्रसार के कार्य को करने का मौका देना होगा।

13. किसी भी समाज में विद्वान प्रचारकों का अभाव उसके भविष्य के लिए घातक होता है। विद्वानों, भजनोपदेशकों के निर्माण के लिए अधिक–से–अधिक उपदेशक विद्यालय गुरुकुलों आदि का संचालन अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए डी.ए.वी. द्वारा संचालित दयानन्द ब्राह्म विद्यालय पूर्व में अच्छे आर्यों विद्वानों की उद्गमस्थली रहा है। आर्य समाज सेवा सदन द्वारा निर्माणाधीन उपदेशक विद्यालय की योजना भी एक अच्छी योजना है। अन्य धर्मों की पूरी जानकारी भी अपने आर्य सिद्धांतों के मंडन के लिए अत्यंत आवश्यक है। शास्त्रार्थ के लिए विश्व प्रसिद्ध आर्य समाज में वर्तमान समय में यह कमी काफी अखरती है। संस्कृत के साथ–साथ अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी पर समान अधिकार रखने वाले विद्वानों की सख्त आवश्यकता है। इसके लिए डी.ए.वी. शिक्षण संस्थानों को आगे आना होगा।

14. युवाओं को आर्य बनाने के उद्देश्य से सभी युवा आर्य संगठनों को आपसी मतभेद समाप्त कर एक कार्य योजना बनानी होगी। केवल गर्मियों की छुट्टियों तक सीमित हो चुके आर्य युवा चरित्र निर्माण शिविरों को वर्ष भर चलाना, नए–नए जुड़े युवा साथियों को लगातार प्रोत्साहित करना और एक युवा शक्ति का निर्माण करना आज समय की आवश्यकता है। इसके लिए युवा संगठनों को धन की कमी आड़े ना आए इस बात को आर्य दानवीरों, भामाशाहों को सुनिश्चित करना होगा।

15. जहां एक ओर युवाओं को प्रोत्साहित करके सहयोग देना आर्य नेताओं के लिए आवश्यक है वहीं आर्य नेताओं का सम्मान करना युवाओं का दायित्व है। युवा शक्ति उस पहाड़ी नदी की भांति ऊर्जा समेटे हुए है जिसकी ऊर्जा के प्रयोग के लिए अनुभव के बांध की आवश्यकता है। यदि युवा शक्ति को ठीक ढंग से संचय करके प्रयोग करें तो वह विकास में सहायक होगी, अन्यथा यह प्रलयंकारी बाढ़ लाकर विनाशकारी भी सिद्ध हो सकती है।

16. सरकारी शिक्षा सत्र के उपरांत देश में सबसे बड़े शिक्षातंत्र के रूप में स्थापित हो चुके डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं को भी बचपन में ही बच्चों में आर्य सिद्धांतों के संस्कार डालने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को बड़ी ईमानदारी के साथ निभाना होगा। इसके लिए आर्य युवा समाज को सुदृढ़ करना डी.ए.वी. के प्राचार्यों, शिक्षकों को आर्य सिद्धांतों की पूरी जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। डी.ए.वी. के

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

☞ पृष्ठ 6 का शेष

दयानन्द : जैसा मैंने....

कोई गुरुमन्त्र ही दिया और न किसी नई पूजा पद्धति का विधान किया। आपने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मेरा कोई भी नया मत या सम्प्रदाय स्थापित करने की कोई इच्छा नहीं है और न ही मैंने अपनी ओर से कोई बात कही है, बल्कि ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि तक ऋषि–मुनियों ने वेदानुसार जिन मान्यताओं को माना है उसी को लोगों के सामने रखा है, क्योंकि अपने आलस्य, प्रमाद तथा ऐषणाओं के कारण लोग उन मान्यताओं को भूल चुके थे। किसी नई संस्था की स्थापना करने की भी आपकी इच्छा नहीं थी, मगर फिर भी लोगों के आग्रह पर आपने 'आर्यसमाज' की स्थापना की और संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य बताया अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना तथा इस उन्नति का आधार अपने वेदों को ही माना। आपने आर्यसमाज के जो दस नियम बनाए वे संसार के इतिहास में अद्वितीय ही नहीं, बल्कि अनुपम भी हैं। उन नियमों के रहते कोई भी इस संस्था पर उंगली नहीं उठा सकता है। उप–नियमों के रूप में आपने संस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए ऐसे सूत्र दिए जिनका अक्षरशः अनुपालन करने से आर्यसमाज कभी भी अधोगति को प्राप्त नहीं हो सकता। हे अद्वितीय विधिवेता! यह तो ठीक है कि प्रारंभ में नियमों और उपनियमों का भली प्रकार से कार्यान्वयन होता रहा जिसके कारण आर्यसमाज ने अभ्युदय के व्योम् को छू लिया, मगर आज स्थिति कुछ विपरीत है। आज अधिकतम समाजों में सेवा का स्थान स्वार्थ ने लिया है। सच्ची बात तो यह है कि आपको कोई समझ नहीं सका या समझते हुए भी कोई समझना नहीं चाहता है, अन्यथा आपके ही समाज में आपके द्वारा ही बनाए गए नियमों और उपनियमों की अवहेलना अपने–अपने स्वार्थो के लिए न की जाती। आपने इस समाज का सदस्य बनने के लिए जिस सदाचार को आधार बनाया था आज उसका कोई महत्त्व नहीं रहा है, साधारण सदस्यों और सभासदों के लिए जो नियम आपने बताए उन्हें आज कोई मानने वाला नहीं रहा, उपस्थिति रजिस्टर का प्रयोग या तो किया ही नहीं जाता और यदि किया जाता है तो केवल अपने गुट को शक्तिशाली बनाने के लिए, शतांश देने की बात कोई भी मानने के लिए तैयार नहीं। भगवन! आश्चर्य तो यह है कि ऐसे लोग ही अपने आप को सच्चे आर्य कहते हैं तथा जो आपके द्वारा स्थापित नियमों व उपनियमों की बात करता है उसे बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है। उस विशुद्ध आर्य को परे हटाने के लिए ये तथाकथित आर्य संगठित हो जाते हैं। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाजों तथा उससे सम्बन्धित सम्पत्तियों पर गैर आर्यों का अधिपत्य हो गया है... बड़े–बड़े अनुशासनहीनों तथा घपला करने वालों का पक्ष लेने वाले तो बहुमत में मिल जाएंगे। मगर सत्य और सदाचारी का कोई साथ नहीं देता.... हे स्मरणीय देव! आप अपने जीवन में सदा सत्य के पक्ष में खड़े रहे... गालियां सुनीं, जहर पीए, आपकी अवहेलना हुई, झूठा अपयश हुआ, मगर आपने कभी सत्य का मार्ग नहीं छोड़ा। इसी प्रकार आज भी आपके सच्चे मानस पुत्रों को यही कष्ट सहने पड़ रहे हैं, अन्तर मात्र इतना है कि आपको गैरों ने जहर दिए मगर आज जहर देने वाले अपने ही हैं। सत्य के पक्षधरों पर आज भी न केवल व्यंग्यवाण छोड़े जाते हैं बल्कि उन्हें मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति द्वारा भी सरेआम अपमानित कर दिया जाता है.... उन्हें कहीं पर भी प्रश्रय नहीं मिल पाता है... फिर ऐसे सत्य के पक्षधरों के सामने उपराम होने के अतिरिक्त और कोई चारा भी तो नहीं रह जाता है। इस प्रक्रिया के चलते आर्यसमाजों पर अनार्यों का आधिपत्य होता जा रहा है....

हे ऋषिवर! हे गुणों के भण्डार! हे पतितपावन, कृपासिन्धु, जगत् उद्धारक श्रद्धेय गुरुवर! आप जैसी दिव्य विभूति को समझ पाना बहुत कठिन है। आज कोई यह सोचने तक के लिए तैयार नहीं है, कि आपके समान पूर्णतया स्वार्थरहित होकर कोई अपना सर्वस्व न्योछावर कर सकता है क्योंकि आज सभी अपनी–अपनी ऐषणाओं में आकण्ठ डूबे हुए हैं। जो भी आपको थोड़ा–बहुत समझ पाया वह तो गुरुदत्त हो गया, लेखराम हो गया, श्रद्धानन्द हो गया, दर्शनानन्द हो गया, हंसराज हो गया, राजपाल हो गया, बिस्मिल हो गया, लाजपत हो गया, भगतसिंह हो गया, श्यामजी कृष्ण वर्मा हो गया। जहां तक इस अकिंचन की बात है, यदि आपकी ज्ञान–रश्मियों का प्रसाद न मिला होता, तो यह अंकिचन भी अभद्रताओं और दुरितों के बियावान जंगलों में भटक–भटककर इस देव दुर्लभ मानव योनि को चन्दन वन को कोयला बना–बनाकर बेचने वाले अज्ञानी की तरह ही नष्ट करके युगों–युगों तक भटकाव का मार्ग अपनाकर तहस–नहस हो जाता मगर आपकी ज्ञान–रश्मियों ने एक ऐसा दिव्य आलोक प्रदान किया कि इस मानव–योनि के महत्त्व को समझकर आपके द्वारा दिए गए दिशानिर्देशों को आत्मसात् करके धन्य हुआ हूँ। हे महामानव! ज्ञानावतार! किन शब्दों द्वारा मैं आपका आभार व्यक्त करूं समझ नहीं आ रहा है। अर्जुन द्वारा शंका करने पर श्रीकृष्ण जी ने कहा था कि मेरे मार्ग पर चला हुआ व्यक्ति कभी नष्ट नहीं होता है। इससे अर्जुन आश्वस्त हो गया था। ऋषिवर! मेरे हृदय में भी आपकी ये पंक्तियां गहराई से अंकित हो गई हैं कि जो व्यक्ति भी परोपकार तथा वेद प्रचार में अपने जीवन को लगाएगा उसका अगला जन्म अच्छे–धार्मिक मां–बाप के यहां होगा। मेरे लिए आपके द्वारा दिया हुआ यह आश्वासन ही बहुत है। मैं आपकी एक–एक बात को नहीं, बल्कि एक–एक शब्द को प्रमाण मानता हूँ क्योंकि आप जैसे आप्त लोगों के मुखारविन्द से निकले हुए शब्द ही मेरे लिए अन्तिम प्रमाण हैं।

हे पूज्य गुरुवर! आप जैसी विद्वता, साहस, निर्भीकता, आत्मविश्वास तो किसी दिव्य महामानव में ही हो सकता है, मगर फिर भी आपके जीवन की एक–एक घटना मेरे भीतर भी सत्य के मार्ग से अविचलित रहने की प्रेरणा देती रहती है। जब कभी जीवन में कुटिलताओं का सामना होता है तो स्वयं अपने भीतर झांककर देख लेता हूँ कि कहीं मेरे भीतर कोई एषणा तो नहीं पनप रही है... फिर आश्वस्त होकर कर्तव्य पथ पर पूर्ववत द्विगुणित साहस के साथ चल पड़ता हूँ। हे त्यागमूर्ति! आप कभी किसी मानव के प्रति उत्तरदायी नहीं रहे, बल्कि जहां तक मैं समझा हूँ आप अपने और परमात्मा के प्रति ही उत्तरदायी होकर जीवन की कटुताओं को सहते रहे। काशी शास्त्रार्थ में जब कुटिल लोगों ने आपकी जीवन लीला समाप्त करने का षड्यन्त्र रचा था और ब्रह्मचारी बलदेव ने आपको शास्त्रार्थ स्थल पर न जाने के लिए कहा था तो आपने निर्भीकता के साथ कहा था–ब्रह्मचारी घबराते क्यों हो, एक मैं हूँ जीवात्मा एक मेरा रक्षक है परमात्मा तथा धर्म मेरे साथ है इसलिए मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। भगवन! यही कसौटी व्यक्ति को हर मुसीबत से उबारने के लिए काफी है। हम परमात्मा के उपासक बनें, आत्मचेता बनकर प्रभु के प्रति समर्पित रहें और कभी भी सत्य एवं धर्म के मार्ग को न छोड़ें, यही जीवन की पवित्रता और आत्म विवेक की कसौटी है। आचार्यवर! आपकी प्रेरणा से एक संकल्प लिया है कि यह जीवन तो क्या यदि बार–बार मानव–योनि मिले तो वेद के प्रचार व प्रसार के लिए ही आहुत करूँ। यह भी सत्य है कि हजारों–लाखों बार जन्म लेकर भी यदि यह कार्य करता रहा तो भी हे दयासिन्धु! आपके ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकुंगा। वितेषणा, पुत्रेषणा और लोकेषणा से रहित होकर इस मार्ग पर अविरल चल रहा हूँ और प्रतिदिन परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे अहंकार और लोभ की वृत्ति से सदा इसी प्रकार उपराम रखना। अपने सुख–दुख, हानि–लाभ, यश–अपयश को त्यागकर जो अभियान आरंभ किया है, दुनिया के स्वार्थी लोगों के उपालंभों से उससे कभी भी विमुख न होऊँ। आपके त्यागमय और परोपकारी जीवन पर जब–जब भी दृष्टिपात करता हूँ हृदय में बहुत बल और साहस का संचार होता है। कदम–कदम पर हर क्षण मैं आपको अपने आस–पास ही नहीं, बल्कि हृदय में सदा प्रेरक के रूप में देखता हूँ। इसे कोई भले ही मेरा अन्धविश्वास तथा अतिश्योक्ति ही समझे, मगर मेरे प्यारे ऋषि! आपने एक बार नहीं, बल्कि लाखों ही बार दुःख और किंकर्त्तव्यविमूढ़ अवस्था में मुझे उबारा है। आपकी प्रेरणा को मैंने अविरल अनुभव किया है। परमात्मा की कृपा और आपका आर्शीवाद ही मेरा सर्वस्व है।

महादेव, सुन्दर नगर, जिला–मण्डी (हि.प्र.)

☞ पृष्ठ 7 का शेष

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् –...

कितने विद्वान प्राचार्यो ने अपने समय में त्यागपूर्ण ढंग से आर्य प्रचार–प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान में तो पूनम सूरी जी के नेतृत्व में डी.ए.वी. आंदोलन से आर्यसमाज की अपेक्षाएं बहुत बढ़ गई है।

17. बच्चे कच्ची मिट्टी के समान होते हैं, बचपन में सीखी बातें पूरे जीवन साथ रहती हैं। इसलिए प्रत्येक आर्य समाज एवं आर्य शिक्षण संस्थान में आर्य कुमार सभा का संचालन अत्यंत आवश्यक है। फरीदाबाद में आर्य समाजों में कुमार सभाएं सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं, जो कि अन्य समाजों के लिए अनुकरणीय हैं।

18. महर्षि दयानन्द सरस्ती ने परोपकार को आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य बतलाया है। आदिवासी क्षेत्रों, गरीब बस्तियों आदि में सेना प्रकल्प खोलना जिसमें धर्माथ औषधालय, सिलाई, प्रशिक्षण केन्द्र आदि अन्य स्वरोजगार के साधन देकर हम उन गरीब, वंचितों को अपने साथ जोड़ सकते हैं। सामूहिक विवाह आयोजन, रक्तदान शिविरों, नेत्रदान अभियान–जैसे सामाजिक कार्यो का भी आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में अच्छा प्रभाव पड़ता है।

502, जी एच–27
सेक्टर 20 पंचकूला
09467608686

संयुक्त परिवार अभी भी उपयोगी

● उमाकान्त उपाध्याय

परम्परा से भारतवर्ष संयुक्त परिवारों का देश है। कई बार तो दो–तीन पीढ़ियाँ भी एक साथ रहती आयी थीं। इसका मुख्य कारण आनुवंशीय, खानदानी पेशा था। कृषक, वंशानुवंश कृषि करते थे। यही बात नाई, लोहार, सोनार सबके साथ लागू होती थी। एकाध अपवाद तो सदा, सर्वत्र रहे हैं किन्तु सामान्य रूप से परिवार अपने देशों से ही जुड़े रहते थे। यह व्यवस्था संयुक्त परिवारों के अनुकूल थी, बल्कि यह कहना चाहिए कि इस खानदानी व्यवस्था के लिए संयुक्त परिवार आवश्यक थे। परम्परा से लोग गांव में ही रहते थे, 5–10 प्रतिशत ही नगर निवासी थे। 1947 ई. में देश स्वतंत्र हुआ और 1951 ई. से योजनाबद्ध आर्थिक विकास का इतिहास आरम्भ हुआ। परिवारों का गठन प्रायः आर्थिक समस्याओं को केन्द्र करके हुआ करता है। इस प्रकार भारतवर्ष में आर्थिक संक्रमण का काल प्रथम पंचवर्षीय योजना के साथ आरम्भ हुआ।

आर्थिक संक्रमण के साथ परिवार संस्था का विघटनः–प्रथम पंचवर्षीय योजना कृषि प्रधान थी। कृषि की प्रधानता देश–विभाजन के पश्चात् अति महत्वपूर्ण हो गयी थी। कृषि उत्पादन की दृष्टि से पाकिस्तानी पंजाब और बांगलादेश बहुत अधिक अतिरिक्त, सरप्लस उत्पादन करने वाले थे। अधिक उपजाऊ भूमि, अतिरिक्त खाद्यान्न और उद्योगों के लिए कच्चा माल, रूई जूट आदि पैदा करने वाली भूमि पाकिस्तान में रह गई और अधिक जनसंख्या शरणार्थी आदि भारत में आ गये। रूई, जूट, गन्ना आदि की मिलें भारतवर्ष में थीं। अतः प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि की प्रधानता रही। इस कालावधि में परिवारों का विघटन भी कम हुआ।

महात्मा गांधी चाहते थे कि कृषि के साथ ग्राम्य उद्योग, कुटीर उद्योग एवं लघु उद्योग विकसित हों। यह योजना, सम्भवतः भारत के आर्थिक विकास के अधिक अनुकूल पड़ती, किन्तु राष्ट्रीय नीति के निर्माता श्री नेहरू जी के मन में पश्चिमी देशों के वृहद् उद्योग और रूस की पंचवर्षीय योजना घर किये बैठी थी, यही उन्हें उपयोगी लग रही थी। अतः द्वितीय पंचवर्षीय योजना उद्योग प्रधान बनायी गयी।

नेहरू जी प्रायः कहा करते थे कि पूर्व पुरुषों ने प्रयाग, हरिद्वार, गंसागर आदि तीर्थ स्थल बनाये थे। हम भी राऊरकेला, भिलाई, सिन्द्री, दुर्गापुर आदि नये तीर्थस्थान बना रहे हैं। ये सब सरकारी उद्यम थे। किन्तु अपरिक्व शीघ्रता की नीति थी। तृतीय पंचवर्षीय योजना फिर कृषि प्रधान बनी। इस तरह आज हमारी 12 योजनाएं पूरी होने जा रही है। इन योजनाओं के 60 वर्षों में नीति की निरन्तररा न रही। नेहरूजी सोशिलस्ट थे। रूस की तरह यह नीति भी समाप्त हो गयी। आज हम पूर्ण रूप से आर्थिक विकास की दृष्टि से पूंजीवादी व्यवस्था में चल रहे हैं।

आधुनिकता और शहरीकरण की ओर संक्रमणः– आर्थिक उन्नति का आधुनिक अर्थशास्त्री यह अर्थ लगाते हैं कि शहरीकरण कितना बढ़ रहा है और साथ ही देश की जनसंख्या में बिजली, टेलीफोन और यन्त्रीकरण कितना बढ़ रहा है। भारतवर्ष में शहरीकरण प्रगति पर है। गांव में पुरानी परम्परा की हल–बैल वाली खेती और तालाब, रहट आदि की पुरानी सिंचाई भी नहीं के बराबर हो गई है। गांव में जंगल–बाग कम हो गये हैं। इसलिए परम्परा के जलावन, लकड़ी और उपले आदि भी समाप्त ही हो गये हैं। इन सारे परिवर्तनों का प्रभाव परिवार की संरचना पर पड़ रहा है।

वृद्धों और शिशुओं की समस्याः– गांव में 65–70 साल के ऊपर के वृद्ध बेकार हो गये है, साथ ही युवती, स्त्रियाँ रोजगार की खोज में बच्चों की परवरिश पर ध्यान कम दे पा रहीं हैं। घर के खर्चे बढ़ गये हैं। आटा पीसने और चावल कूटने, तेल निकालने आदि की मशीनें गांव में भी बढ़ती जा रही हैं। संयुक्त परिवार में दादा–दादियां, नाती–पोते–पोतियों की संभाल कर लेते थे। किन्तु इस संयुक्त परिवार के विघटन ने सामाजिक दायित्व और लोक–लज्जा को समाप्त कर दिया है। इस तरह टूटते संयुक्त परिवारों की ओर न ग्राम पंचायतों का ध्यान है, न सरकार का ध्यान है। बच्चे और बुजुर्ग दोनों ही उपेक्षित हो रहे हैं।

सरकार की जनकल्याण योजनाओं की पड़तालः– सरकार ने कुछ जन कल्याणकारी योजनाएँ चालू की हैं– (1) ग्रामीण रोजगार योजना (2) वृद्धों को पेंशन (3) बेरोजगार सहायता (4) विधवाओं को सहायता। ये सभी योजनाएं यूँ देखने पर ठीक ही लगती हैं। वृद्धों को पेंशन अच्छी योजना है। पेंशन के आर्थिक आकर्षण से बेटे–बहुएं बूढ़ों का ख्याल रखें, अच्छी बात है। जहां तक मनरेगा, रोजगार योजना की बात है, उसकी सफलता पर रिपोर्ट उत्साह वर्धक नहीं है। कहते हैं कि काम करने वाले भी बेगार करते हैं। पूरा परिश्रम नहीं करते। सरकार का 70–80 प्रतिशत पैसा बिचौलियों के हिस्से में चला जाता है और थोड़े परिश्रम से जो थोड़ी मजदूरी ग्रामीण मजदूर को मिल जाती है उसी में बन्दरबाट पर वह राजी हो जाता है। समग्र रूप से कार्य संस्कृति और परिश्रमशीलता यूँ नष्ट हो रही है। यह राष्ट्रीय हित में मंहगा सौदा है।

जहां तक बेकारों को राहत की योजना है, यह भूचाल, तूफान, सुनामी–जैसी विपदाओं के बाद अल्पकालिक रूप से तो ठीक हो सकती है। किन्तु रोजगार की जगह परिश्रम और कार्य संस्कृति का समाप्त होना चिन्ताजनक है। सरकार 40 वर्ष और ऊपर की विधवाओं को राहत देती है। आगे 28 साल और ऊपर की विधवाओं को राहत देने की योजना है। इन युवती विधवाओं को संयुक्त परिवार के बुजुर्गों की छत्र–छाया में रोजगार की आवश्यकता है। यहां संयुक्त परिवार बहुत आवश्यक है।

गांव में सुरक्षा, असामाजिक तत्व, शराबी, जुआरी इतने बढ़ते जा रहे हैं कि सारा पारिवारिक जीवन असुरक्षित हो गया है। गांव में रात को घर से बाहर सोना बन्द हो गया है। इस स्थिति में स्त्रियों और बच्चों की सुरक्षा के लिए संयुक्त परिवार आवश्यक लगते हैं।

शहरों की अवस्थाः–अब तक हम ग्रामीण समस्याओं पर विचार कर रहे थे अब शहरों पर भी विचार करते हैं। शहरों में मोटे तौर पर तीन तरह के लोग बसते हैं–(1) उच्च आय के परिवार (2) खाते–पीते परिवार जो गरीबी रेखा से ऊपर हैं, (3) गरीबी रेखा से नीचे और झुग्गी–झोपड़ी वाले परिवार। इन सबकी समस्याएँ अलग–अलग तरह की हैं।

(1) उच्च आय वाले लोगः– ये नौकर, दायियाँ रख सकते हैं किन्तु फिर भी इन परिवारों के शिशु और वृद्ध समस्याओं से मुक्त नहीं हैं। कुछ माताएँ अपने बच्चों का पूरा सरोकार रखती हैं। किन्तु अधिकतर पुरुष अपने काम में व्यवसाय और नौकरी में ऐसे लगे रहते हैं कि बच्चे और बुजुर्ग दोनों उपेक्षित हो जाते हैं। ये परिवार नर्सरी स्कूलों का उपयोग करते हैं किन्तु उससे पहले भी परवरिश की आवश्यकता है। संयुक्त परिवार हो तो वृद्ध –बुजुर्ग सहयोग कर सकते हैं, किन्तु यदि बूढ़े भारी पड़ने लगे तो कमाने वालों के लिये बवाल हो जाता है। अभी हमारे देश में वृद्ध आश्रम की संस्कृति विकसित नहीं हुई है।

(2) खाते–पीते परिवारः– ये नौकर और दायियाँ रखने में समर्थ नहीं हैं। यदि स्त्री–पुरुष दोनों काम करते हों तो बच्चे और बूढ़ों की समस्या विकट हो जाती है। यदि बेटे–बहू, माता–पिता को देवी–देवता समझकर संभालों और वृद्ध लोग छोटे बच्चों को भगवान का वरदान मानकर संभाल लें तो समस्या उतनी गंभीर नहीं बनती और संयुक्त परिवार की व्यवस्था में गृहस्थी चलती ही रहती है, नहीं तो बच्चों और बूढ़ों की दुर्गति तथा घर की असुरक्षा अत्यंत बढ़ जाती है। बच्चों की उपेक्षा हो जाती है।

(3) **झुग्गी–झोपड़ी वालों की समस्याएंः** गरीबी रेखा से नीचे वालों की समस्याएं और जटिल हैं। उन्हें परिवार की परवरिश के साथ आर्थिक समस्याओं में भी जूझना पड़ता है। यदि संयुक्त परिवार हो तो युवक–युवतियाँ रोजगार में रहकर, काम करके कुछ समाधान बना भी लें। अन्यथा सबकी दुर्गति ही होती है।

अभी आर्थिक संक्रमण का जो समय चल रहा है उसमे गांव हो या शहर, धनी हो या निर्धन, सभी जगह संयुक्त परिवारों की अपनी उपयोगिता है।

महात्मा गांधी चाहते थे कि कृषि के साथ ग्राम्य उद्योग, कुटीर उद्योग एवं लघु उद्योग विकसित हों। यह योजना, सम्भवतः भारत के आर्थिक विकास के अधिक अनुकूल पड़ती, किन्तु राष्ट्रीय नीति के निर्माता श्री नेहरू जी के मन में पश्चिमी देशों के वृहद् उद्योग और रूस की पंचवर्षीय योजना घर किये बैठी थी, यही उन्हें उपयोगी लग रही थी। अतः द्वितीय पंचवर्षीय योजना उद्योग प्रधान बनायी गयी।

नेहरू जी प्रायः कहा करते थे कि पूर्व पुरुषों ने प्रयाग, हरिद्वार, गंसागर आदि तीर्थ स्थल बनाये थे। हम भी राऊरकेला, भिलाई, सिन्द्री, दुर्गापुर आदि नये तीर्थस्थान बना रहे हैं। ये सब सरकारी उद्यम थे। किन्तु अपरिक्व शीघ्रता की नीति थी। तृतीय पंचवर्षीय योजना फिर कृषि प्रधान बनी। इस तरह आज हमारी 12 योजनाएं पूरी होने जा रही हैं। इन योजनाओं के 60 वर्षों में नीति की निरन्तररा न रही। नेहरूजी सोशिलस्ट थे। रूस की तरह यह नीति भी समाप्त हो गयी। आज हम पूर्ण रूप से आर्थिक विकास की दृष्टि से पूंजीवादी व्यवस्था में चल रहे हैं।

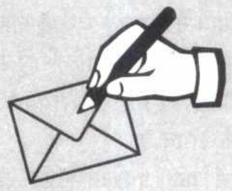

पत्र/कविता

2013 की सुबह हमारी हो। आर्य समाज की हो!

यो जागार तम ऋच कामयन्ति।

जागने वाले की कामना पूरी होती है। आवश्यकता है सिर्फ जगाने की। पर जागना केवल नींद का न होना ही नहीं है। जागना एक सम्पूर्ण स्थिति है। यदि हम तन, मन और विवेक से जागृत हैं तो जागना है। यानि कि हम अपने–पराये सबका हित चाहें।

हमने 2012 तक कितना उपयोग/दुरुपयोग किया प्रकृति का, प्राकृतिक संसाधनों का और कितना प्रकृति को वापस लौटाया, आवश्यकता है इस पर मनन की और आवश्यकता है विचार पर काम करने की।

क्या हमने कभी यह सोचा हमारे पूर्वज हमारे लिये धरती, पानी, सूरज, हवा और आकाश कितना छोड़ गये और किस हालात में छोड़ गये और हमने उसको किस हालात में पहुंचा दिया।

हो सकता है आप यह सोचें कि कितना छोड़ने से और कैसा छोड़ने से क्या तात्पर्य है? क्या सूरज, धरती, आकाश, हवा पानी की Size पहले से कम हो गई है या उसकी स्थिति में बदलाव आया है। यही विषय है हमारे सोचने, हमारे विचारने का, क्योंकि इसके बिना हम हमारी आनेवाली पीढ़ी के सामने शर्मिंदा होंगे, निरुतर होंगे।

हम इन पांचों तत्वों (धरती, पानी, हवा, सूरज और आकाश) का सदैव उपयोग करते हैं और इस सदी में तो बेरहमी से दोहन भी करते रहे हैं। बिना विचारे, बिना चिंतन किए, बिना सोच किए।

क्या कभी हमने सोचा है पहाड़, नदी, समुद्र, धरती, पठार की कितनी खुदाई कर दी। धरती माता की छाती पर कितने छेद कर दिए और पानी, हवा, आकाश को कितना प्रदूषित कर दिया।

हम यहीं नहीं ठहरे। विकास के नाम पर, आवास के नाम पर, उद्योग व सरकारी परियोजनाओं के नाम, कितने पेड़ काट दिये? कितनी हरियाली स्वाहा कर दी? और कितनी खेती की जमीन में सीमेन्ट, कंकरीट व लोहे के स्ट्रक्चर खड़े कर दिये।

कभी यह भी नहीं विचारा कि परमात्मा ने मनुष्य शरीर के साथ ही प्रकृति एवं अन्य जीवों का कितना विशाल संसार दिया प्राकृतिक संतुलन के लिए, हमारे जीवन में स्वास्थ्य, सम्पन्नता व प्रसन्नता के लिये। फिर कैसे हम इन्हें नष्ट कर स्वस्थ, प्रसन्न रह सकते हैं। अरे इतना ही नहीं हमने तो भूजल, खेती व पशुधन से भी इतनी खिलवाड़ की है कि कृषि प्रधान देश में कृषि और पशुपालन का GDP में जो योगदान होना चाहिए वह नहीं है।

प्राकृतिक संसाधन व मौसम इस देश की विशेषता हैं। भारत में छः ऋतुएं हैं जबकि अन्य देशों में तीन। सूर्य की पहली किरण भारत की धरती को नमन करती है, हिमालय जैसा विशाल पर्वत हमारी पहचान है, गंगा, ब्रहमपुत्र, यमुना जैसी नदियाँ हमारे देश के चरण पखारती हैं। हमारे भूगर्भ में दबी प्राकृतिक सम्पत्ति सहज ही पूरे विश्व को ललचाती है। ऐसे में यह बहुत जरूरी है कि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग Need से करें greed से नहीं। प्रकृति की रक्षा करना, हमारा पहला कर्तव्य हो और प्रकृति के उपयोग को वापस लौटाना हम हमारा धर्म मानें। इसलिए स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने पंच महायज्ञ की व्यवस्था की, प्रकृति को वापस लौटाने की, प्राकृतिक संसाधनों को शुद्ध करने की, हम प्रकृति के प्रदूषण को दूर करने में हमारी अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें और आज से ही पूरी शिद्दत से लग जाएं– **वृक्ष बचाओ, पानी बचाओ, बिजली बचाओ, सबको पढ़ाओ और बेटी बचाओ**, में तब निश्चय ही 2013 की सुबह हमारी होगी, भारत की होगी और हम विश्व का नेतृत्व करेंगे।

यो जागार तम् ऋचः कामयन्ते।

डॉ. श्रीगोपाल बाहेती
लक्ष्मी भवन, पृथ्वीराज मार्ग,
अजमेर (305001)
फोन : 0145–262121

****

बोधरात्रि (शिवरात्रि) के अवसर पर

जागो आर्यो! भुला न देना ऋषिवर का अनुपम बलिदान

शिवरात्रि की बोध रात्रि में जागी थी एक ज्योति महान
जागो आर्यो! भुला न देना ऋषिवर का अनुपम बलिदान।।

शिवपर्व बना जीवन प्रकाश, विस्फोट हुआ वह प्रलयंकर
ऋषि के त्रिनेत्र थे जाग उठे, वे लगे खोजने शिव–शंकर।।

जड़पूजा से आसक्ति मिटी, तम त्याग चुका था नवविहान
जागो आर्यो भुला न देना, ऋषिवर का अनुपम बलिदान।।

ऋषि–मुनियों की पावन संस्कृति घनघोर निशा में सोयी थी,
पंथों की झंझावातों में दिग्भ्रान्त पथिक सी खोई थी।।

ऋषिवर ने जब भृकुटी तानी, टूटा संमोहन का वितान
जागो आर्यो भुला न देना ऋषिवर का अनुपम बलिदान।।

सब पंडे, पंडित पौराणिक, निज स्वार्थ साधना में रत थे,
थे श्रुति–विहीन सब धर्म–कर्म, परवशता में सब हतप्रभ थे।।

पाखंड खंडिनी बिगुल बजा, ऋषिवर ने गाया क्रांति गान
जागो आर्यो भुला न देना, ऋषिवर का अनुपम बलिदान।।

थे शास्त्र–अनर्गल, वाद–वितंडा, पोप और पंडित अभिमानी,
करते थे उत्पात भयानक, शास्त्रों की व्याख्या मनमानी।।

सत्यार्थ प्रकाश लिखा ऋषि ने, करके व्यापक अनुसंधान
जागो आर्यो भुला न देना, ऋषिवर का अनुपम बलिदान।।

आसुरी अनय फिर जागा है, बज रहा नाश का शंखनाद,
वेदों की ज्योति जलाओ फिर, भागे तम–तामस का विवाद।।

आर्यो अब फिर से जागो, लेकर ऋषिवर का विधि–विधान
जागो आर्यो भुला न देना, ऋषिवर का अनुपम बलिदान।।

शिवकरण दूबे 'वेदराही'
शक्ति नगर, जिला–सोनभद्र (उ.प्र)

क्या आप जानते हो?

1. लम्बे लम्बे नाखून बढ़ाना और उन पर नेल पालिश लगाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
2. स्टोव या गैस की नंगी लौ पर कोई चीज भूनकर या सेककर खाना हानिकारक है। वस्तु में दुर्गन्ध भर जाती है।
3. चाय की पत्ती को बार–बार उबाल कर पीने से दाँत और आँत दोनों खराब हो जाते हैं।
4. धूम्रपान मद्यपान करना अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना है।
5. नाईलोन के चमकदार कपड़े पहनने से चर्म रोग होने की सम्भावना रहती है और यह आग को शीघ्र पकड़ते हैं।
6. माँस, मछली, अण्डे, चिकन मनुष्य का भोजन नहीं है। इनके खाने से शरीर में अनेक प्रकार के भयकर रोग लग जाते हैं। यदि स्वस्थ निरोग रहना चाहाते हो तो शुद्ध शकाहारी बनो।
7. ऊँची ऐडी के सेन्डल पहनकर चलने से सिर दर्द कमर दर्द होता है।

किसी को कोई शंका हो तो हमसे निम्न पते पर सम्पर्क करके समाधान कर सकता है।

देवराज आर्यमित्र
WZ–428 हरि नगर, नई दिल्ली 110064

नवांशहर-दोआबा में मनाया गया वार्षिकोत्सव

आर.एम.बी.डी.ए.वी. सीनियर सैकेन्डरी पब्लिक स्कूल नवांशहर में पिछले दिनों वार्षिकोत्सव तथा पुरस्कार वितरण समारोह मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्यातिथि सांसद सरदार रवनीत सिंह बिट्टू तथा विधायिका श्री मति गुरइकबाल कौर थीं, दीप प्रज्ज्वलन से समारोह का शुभारम्भ किया गया रंगारंग कार्यक्रम में *धीयां दा सत्कार करो* थीम पर विद्यार्थियों ने अपनी भाव भंगिमा से सबका मन मोह लिया। देश भक्ति की भावना को और भी प्रगाढ़ करने के लिए विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत कोरियोग्राफी 'वंदेमातरम्' काफी प्रभावशाली रही। नन्हे मुन्ने बच्चों ने भी अपनी कला प्रतिभा से समाँ बाँधा। प्रधानाचार्य, (श्री रवीन्द्र भास्कर' ने स्कूल की विभिन्न

गतिविधियों से सबको अवगत करवाया और विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरित कर उन्हें सम्मानित किया। पूरा समारोह मनोरंजन से भरपूर रहा। मुख्यातिथि ने विद्यार्थियों को संदेश दिया और स्कूल के उज्ज्वल भविष्य की कामना की! प्रधानाचार्य ने मुख्यातिथि को ट्राफी देकर सम्मानित किया और उनका धन्यवाद किया गया। मुख्यातिथियों ने डी.ए.वी. शिक्षा संस्थानों के द्वारा वर्तमान शिक्षा प्रणाली में किये गए अभूतपूर्व सहयोग की दिल खोलकर सराहना की।

मोनेट डी.ए.वी. में काव्य पाठ

हिन्दी के विख्यात कवि डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी जी विशेष आग्रह पर मोनेट डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल रायपुर में आये। विद्यालय में वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता चल रहा था। जैसे ही मनीषी जी के आगमन पर हुआ छात्र डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी जी को पाकर हर्ष, उल्लास एवं उमंग से भर गये। मनीषी जी ने विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया, तत्पश्चात् आपने छात्रों को *'अंधेरा बढ़ रहा.....* कविता से अपना उद्बोधन प्रारंभ किया। एक घंटे तक अपने उद्बोधन में छात्रों को देश भक्ति भावना से ओत-प्रोत कर दिया। आपने छात्रों को कहा कि ''जननी एवं जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती है, अतः अपने जीवन में माता-पिता गुरुजनों का सम्मान करते हुए निरन्तर आगे बढ़ें। विश्व वन्दनीय महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित अनेक प्रश्न पूछे जैस-आर्य समाज की स्थापना किसने की? वेदों वाला बाबा कौन? वेद कितने होते हैं? महात्मा हंसराज कौन थे? दयानंद एंग्लो वैदिक से क्या तात्पर्य? इस प्रकार मनीषी जी ने प्रश्नोत्तर शैली के माध्यम से दात्रों को आर्य समाज एवं वैदिक संस्कृति से परिचित कराया जिससे कि छात्रों में वैदिक संस्कृति के प्रति निष्ठा जागृत हो सके। आपके कविताओं को एवं उद्बोधन को सुनकर छात्रों में नई उर्जा एवं स्फूर्ति का संचार हुआ।

प्राचार्य डॉ. बी पी साहू जी के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ।

मूनक में हुई जल-संरक्षण विषय पर प्रतियोगिता

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पंजाब के तत्वावधान में प्रोजेक्ट बूंद के अंतर्गत आदरणीय श्री पूनम सूरी जी (आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. प्रबन्धकत्री समिति, नई दिल्ली) की सत्प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में बाबू वृष भान डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, मूनक द्वारा विद्यालय में प्रतियोगिता करवाई गई। प्रथम से पाचवीं श्रेणी तक के छात्रों ने जल के स्त्रोत दर्शाते हुए अपनी कला प्रदर्शित की। छठी से आठवीं श्रेणी तक के छात्रों ने पोस्टर बनाकर (जल की एक-एक बूंद का हमारे जीवन में महत्व) अपनी कला प्रदर्शित की। नवीं से बारहवीं श्रेणी तक के छात्रों ने जल बचाओ पर नारे लिखते हुए अपनी विचारशक्ति को प्रदर्शित किया। प्रतियोगिता में भाग लेते हुए छात्रों में एक नया जोश उमड़ा हुआ जान पड़ रहा था। विद्यालय के मुख्य अध्यापक श्री मान संजीव शर्मा द्वारा अध्यापकों व छात्रों को जल हेतु कुछ महत्वपूर्ण बातें बताइ। मुख्य अध्यापक द्वारा सभी कक्षाओं का दौरा किया गया और छात्रों के द्वारा प्रदर्शित की गई कला की भरपूर सराहना की। विद्यालय प्रशासन द्वारा यह तय किया गया कि जल चेतना अभियान को कायम रखने के लिए भरपूर प्रयास करेंगे और समय-समय पर प्रतियोगिताएं करवाते रहेंगे।

महर्षि दयानंद ही स्पष्ट बोलने वाले प्रथम महापुरुष

आर्य समाज संभालीनगर (औरंगाबाद) की ओर से स्वर्गीय विधायक शालीग्राम राजाराम बसैये (बंधु) के आठवें स्मृतिदिन निमित्त श्री. बारगजे के निवासस्थान पर आर्य दिनदर्शिका 2013 का लोकार्पण हुआ।

इस अवसर पर प्रबोधन करते हुए डॉ. तोगडिया जी ने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक युगपुरुष महर्षि दयानंद सरस्वती ही इस्लाम व ईसाईयत पर बोलने वाले स्पष्ट एवं प्रखर वक्ता व सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ में समालोचन करनेवाले महापुरुष रहे। आर्ष वैदिक गुरुकुलों की शिक्षा प्रणाली की शुरुवात महर्षि जी के विचारों से प्रभावित महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानंद) ने अपना सर्वस्व अर्पण करके गुरुकुल कांगडी के रूप में की तब से लेकर गुरुकुल आज तक हजारों स्नातकों व प्रचारकों का निर्माण कर रही है। आर्य समाज अपनी स्थापना से आज तक हिन्दु धर्म को जागृत करने का काम प्रहरी सैनिक की तरह कर रहा है। हम सब मिलकर देश की परिस्थिति पर विचार कर व मिलकर वैदिक संस्कृति (हिंदु संस्कृति) की रक्षा करने का काम करते रहेंगे।

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 06-07/03/2013
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

डी.ए.वी. पातड़ाँ में 101 गरीब छात्राओं को वितरित की गई जर्सियां, जुराबें तथा टोपियां

डी.ए.वी. स्कूल पातड़ाँ में वार्षिक उत्सव समारोह हुआ। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सुनीता शर्मा ने समारोह की शुरूआत यज्ञ से करवाई। इस शुभ अवसर पर मुख्यातिथि श्री हंसराज जो गान्धार (मुख्य सलाहकार डी.ए.वी. प्रबन्धकतृ समिति) क्षेत्रीय निदेशक विजयकुमार, मैनेजर डा. माहनलाल शर्मा,जी अभिभावकगण एवम् वरिष्ठ नागरिकजन सम्मिलित हुए। अन्य डी.ए.वी. स्कूलों से प्रधानाचार्य भी पहुँचे। छात्र–छात्राओं ने रंगारंग एवम् आकर्षिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

सामाजिक कुरीतियों एवम् पर्यावरण की समस्या की समस्याओं को विषय बनाया गया। मुख्यातिथि महोदय ने सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागरूक होने को कहा। इन कुरितियों को दूर करने में डी.ए.वी. के योगदान की चर्चा की। उन्होंने जल संरक्षण तथा उर्जा संचय पर अपने विचार प्रकट किए। इस अवसर पर 101 गरीब छात्राओं को जर्सियां, शालें, जुराबें तथा टोपियां बांटी गईं। सभी लोगों ने इस कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की। प्रधानाचार्या जी ने अन्त में सभी का धन्यवाद किया

महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों का प्रचार जन–जन तक हो

डी.ए.वी. संस्था के 127 वर्ष होने के उपलक्ष्य में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कोटा में आयोजित यज्ञ महोत्सव के अवसर पर महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति कोटा द्वारा महर्षि दयानन्द जीवन दर्शन प्रदर्शनी का शुभारंभ आर्य शिरोमणि श्री पूनम सूरी प्रधान डी.ए.वी. कालेज प्रवन्धकृत समिति नई दिल्ली के कर कमलों द्वारा हुआ।

प्रदर्शनी का शुभारंभ करते हुए श्री पूनम सूरी ने कहा कि महर्षि दयानन्द युग पुरूष थे। महर्षि दयानन्द के विचारों का प्रचार जन–जन तक होना चाहिये। महर्षि दयानन्द का सम्पूर्ण जीवन दर्शन एवं वैदिक साहित्य उपलब्ध कराना वेद प्रचार समिति कोटा का अच्छा प्रयास है। प्रदर्शनी को शिक्षकों विद्यार्थियों एवम उनके परिवारजनों ने देखा एवं महर्षि दयानन्द के जीवन से प्रेरणा ली।

पानी को बचाने के लिए जागरूकता रैली निकाली

जे.एन.जे.डी.ए.वी.सी.सै.पब्लिक स्कूल गिद्दड़बाड़ा (पंजाब) डी.ए.वी. के अध्यक्ष श्री पूनम सूरी और प्रादेशिक सभा नई दिल्ली के निर्देशों पर पानी को बचाने हेतु लागों को जागरूक करने के लिए प्रोजेक्ट बूंद के तहत जागरूकता रैली निकाली गई। इस रैली को स्कूल कमेटी के चैयरमैन व पूर्व विधायक रघुवीर सिंह ने झंडी दिखाकर खाना किया। जागरूकता रैली शहर के अलग–अलग बाज़ारों और गलियों से होती हुई वापस स्कूल पहूँची। इस दौरान स्कूल छात्रों ने *''अगर न होगा जल तो जी न पाएँगे कल।'' जल ही जीवन का आधार मत करो इसका तिरस्कार।* आदि के नारों तख्तियाँ उठा कर लोगों को पानी के बचान जागरूक किया।

इस अवसर पर क्षेत्रिय निर्देशक वी.वी.शर्मा, मैनेजर जे.एस. आनंद, स्कूल की प्रधानाचार्या मोनिका खन्ना, ट्रैफिक पुलिस, राजकुमार जी ने बच्चों का उत्साह वर्धन किया।

डी.ए.वी. मानसा ने निकाली जल चेतना रैली

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा साल 2013 को 'जल संरक्षण वर्ष घोषित किये जाने पर 'डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के निर्देशानुसार एस डी.के.एल डी.ए.वी. स्कूल मानसा में 19 जनवरी, 2013 को एक विशाल जल चेतना रैली निकाली गई। जिसका आधार प्रोजैक्ट 'बूँद' था। इस रैली को मानसा के ए.डी.सी (विकास) श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा और प्रिंसीपल श्री सुधीर सिंह जी ठाकुर ने हरी झंडी दिखाकर खाना किया। रैली शहर के मुख्य बाजारों में गई और लोगों को पानी का महत्त्व और उसके बचाव के उपाय बताए। बच्चों ने 'जल है तो कल है' 'सेव वाटर, सेव लाइफ' आदि नारे लगाकर लोगों को प्रेरित किया।

मुद्रक व प्रकाशक – **श्री प्रबोध महाजन,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**